श्री प्रातः नित्य स्मरण संग्रह

शासन प्रभाविका, आशु कवयित्री,
प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्री जी म० सा०
की सुशिष्या साध्वी शशिप्रभाश्रीजी म० सा०

प्रकाशक

श्री पुण्य स्वर्ण ज्ञान पीठ

जयपुर

प्रथम बार	सन्	मूल्य
३०००	१९८४	५) रु

श्री प्रातः नित्य स्मरण संग्रह

•

प्रेरक :

साध्वी शशिप्रभाश्री जी

•

प्रकाशक :

श्री पुण्य स्वर्ण ज्ञान पीठ, जयपुर

•

द्रव्य सहायक :

मै० भूरामल राजमल सुराना
मै० सोभागमल गोकुलचन्द पुंगलिया
श्रीमती सूरजबाई मालपुरा वाले
श्री उमेशचन्दजी पालावत, लखनऊ
श्री माणकचन्द जी केसरीचन्द जी गोलेछा
स्व० श्री सरदारमल जी कास्टिया
आदि अन्य भक्तजन

•

मुद्रक :

फ्रैण्डस प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, जयपुर

दो शब्द

जैन दर्शन मे स्वाध्याय को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। स्वाध्याय चाहे किसी भी प्रकार का क्यो न हो वह आत्म चिन्तन के साथ-साथ आत्म-शुद्धि की ओर अग्रसर करता है। इसी को ध्यान मे रखते हुए श्री प्रात नित्य स्मरण सग्रह की पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री सघ के प्रबल पुण्योदय से इस वर्ष भी जयपुर नगर मे अध्यात्म रस निमग्ना, शासन प्रभाविका, आशु कवयित्री, प्रवर्तिनी साध्वी श्री सज्जनश्री जी म सा, साध्वी श्री शशिप्रभाश्री जी म सा आदि ठाणा ६ चातुर्मास हेतु जयपुर नगर मे विराजमान हैं। आपकी सरलता, विद्वता एव सहृदयता ने सभी को प्रभावित किया है।

प्रतिदिन आपका "आचाराग सूत्र" एव

"नर वर्म चरित्र" पर प्रभाविक व्याख्यान चल रहा है। आपकी व्याख्यान शैली इतनी प्रभाविक है कि जो भी श्रोतागण आपका प्रवचन सुन लेता है वह आत्मविभोर हो उठता है। आप जब से पधारी हैं, धर्म आराधना की झड़ी सी लग गई है।

आपने जयपुर में व्याख्यान के दौरान प्रत्येक रविवार को भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक मंगल पाठ करने की प्रेरणा दी। आपकी ही प्रेरणा से ग्रीष्मकालीन में दस दिवसीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया था। निश्चित ही इससे समाज में अध्यात्म का सूर्योदय हुआ है। जिसके प्रेरणादायी प्रकाश में धर्म के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कर संघ कृतार्थता का अनुभव किए बिना नहीं रहेगा। अब तक अनेक प्रकार की तपस्यायें जिनमें भक्तामर के तेले, भक्तामर महा-पूजन, ६ काय आरम्भ त्याग के एकासणे, प्रत्येक रविवार को तत्त्वज्ञान शिविर, पंचरंगी तपस्या,

अक्षय निधि तप तथा मासक्षमण आदि की तपस्याए शामिल हैं, सम्पन्न हुई हैं।

प्रवर्तिनीश्री जी के जयपुर चातुर्मास की पावन स्मृति मे इस पुस्तक का प्रकाशन श्री पुण्य स्वर्ण ज्ञानपीठ, जयपुर कर रहा है। आशा है इस पुस्तक के प्रकाशन से जो भी कमी महसूस की जा रही थी वह दूर तो होगी ही, साथ ही उदीयमान नई पीढी मे धार्मिक अभिरुचि के साथ पवित्र सस्कारो का उदय होगा।

पुस्तक प्रकाशन मे द्रव्य सहायक दानवीर सेठ भूरामल राजमल सुराना, श्रीमती सूरजबाई मालपुरा वाले, सोभागमल गोकुलचन्द पु गलिया, स्व श्री सरदारमलजी कास्टिया, श्री माणकचन्दजी केसरीचन्दजी गोलेछा आदि रहे। उनके प्रति श्री पुण्य स्वर्ण ज्ञानपीठ आभार प्रकट करता है साथ ही वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक प्रकाशन मे

श्रीमान् सुभाषचन्दजी कांस्टिया एवं फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स का भी पूर्ण सहयोग रहा, जिसके लिए वे वधाई के पात्र हैं। पुस्तक प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, फिर भी सम्भव है कोई त्रुटि जाने अनजाने में रह गई हो तो इसके लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

मंत्री

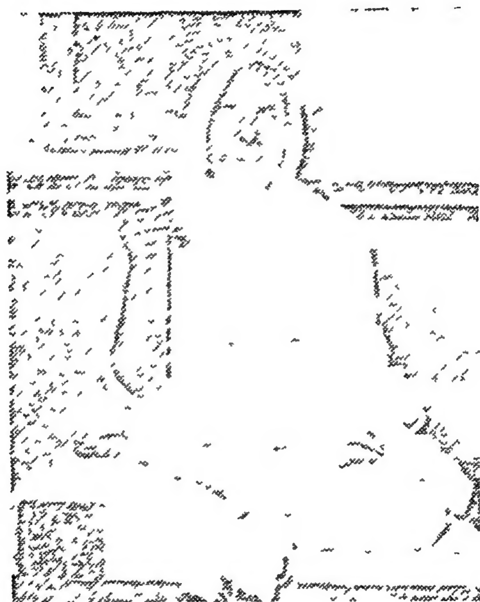
श्री पुण्य स्वर्ण ज्ञानपीठ

जयपुर,
१६ अगस्त, १६८५
द्वि० श्रावण सुदी ४
संवत्सरी पर्व



दादा साहब श्री जिनकुशल सूरिजी म सा

ध्यान निमग्नता, जाप परायणता



स्व० प्रवर्तिनी श्री ज्ञान श्रीजी म० सा०

स्व. प्रवर्तिनीजी श्री ज्ञान श्रीजी म.सा. का संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री जैन खरतरगच्छ नभोमणि श्रीमत् सुख-सागरजी महाराज साहब की समुदाय की प्रसिद्ध साध्वी श्रेष्ठा प्रवर्तिनी श्रीमती पुण्य श्री जी म सा की साध्वी समुदाय की भूतपूर्व प्रवर्तिनी जी श्रीमती ज्ञान श्री जी महोदया का जन्म (फलोदी) मे स० १९४२ की कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को हुआ गृहस्थावस्था मे आपका शुभ नाम गीता कुमारी था।

आपका विवाह भी तत्कालीन रिवाज के अनुसार ९ वर्ष की बाल्यवय मे ही फलोदी निवासी श्रीयुत् विगनचन्द जी वैद के सुपुत्र श्रीयुत् नीलमचन्द जी के साथ कर दिया गया। दैव की लीला,

एक वर्ष में ही आप विधवा हो गयी। आबाल ब्रह्मचारिणी साध्वीरत्न श्रीमती रत्न श्री जी म. सा. की वैराग्य रसमय देशना से आपकी हृदय भूमि में वैराग्य का वीजारोपण हो गया। उक्त श्रीमती जी अपनी गुरुवर्य्या श्रीमती पुण्य श्री जी म. सा. के साथ फलोदी में पधारी हुई थीं।

वैरागिनी गीताबाई की दीक्षा अन्य सात वैरागनियों के साथ फलोदी में ही, गणाधीश श्रीमद् भगवान सागर जी म. सा. तपस्वीवर श्रीमान् छगनसागर जी म. सा. त्रैलोक्य सागर जी म. सा. आदि की अध्यक्षता में वि. सं. १९५५ की पोष शुक्ला सप्तमी को शुभ मुहूर्त्त में समारोह पूर्वक हो गई। आप श्रीमती पुण्य श्री जी म. सा. की शिष्या घोषित की गई। और ज्ञान श्री जी नाम स्थापित किया गया।

आपने अल्प समय में ही व्याकरण, न्याय, काव्य, कोष, अलंकार, छंद एवं जीवविचार, नव-तत्व,

सग्रहीणी कर्म ग्रन्थ एव जैनागमो मे प्रवीणता प्राप्त कर ली थी। सयम पालन मे एक निष्ठता, गुरुजनो के प्रति अनन्य भक्ति एव समानवयस्काओ के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार तथा लघुजनो पर वात्सल्य भाव आदि गुणो के कारण आपके साथ सभी का व्यवहार बडा प्रेमपूर्ण था। २१ वर्ष की अवस्था मे तो अग्रगण्या बनाकर आपको अलग चातुर्मास करने को भेज दिया था।

पू. गुरुवर्य्या श्री की आज्ञा से आपने कई चातुर्मास किये और कई स्थानो पर ज्ञान प्रचार की सस्थायें स्थापित की जिनमे सैलाना का ज्ञान वर्द्धक मण्डल विशेष था। वहाँ से जीवा-जीव राशि प्रकाश एव द्रव्यानुयोग विषय की कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। द्रव्यानुयोग की सूक्ष्म जानकारी जैसी आपको थी, वैसी विरलो को ही होती है। अनेक शास्त्रीय तत्त्वज्ञान मे आप अप्रतिम निष्णात थी।

आपके जीवन में उत्कृष्ट त्याग, अप्रमित संयम और तलस्पर्शी तात्विक ज्ञान की त्रिवेणी का अद्-भूत संगम था। आपने संयमी जीवन के चालीस वर्ष तो विभिन्न प्रान्तों–मारवाड़, मेवाड़, मालव, गुजरात, सौराष्ट्र, उत्तर प्रदेश आदि में विहार करके ही व्यतीत किये थे। अपने मधुर और वैराग्य-मय देशनाओं से जनता को जागृत करते हुये शत्रु-ञ्जय, गिरनार, आबू, तारंगा, खम्भात, धुलेवा, मांडवगढ़, मक्षी, हस्तिनापुर आदि तीर्थों की यात्रायें की थीं। कई स्थानों से तीर्थों के संघ भी निकलवाये थे। आपने भारत के सुदूर नगर जाम-नगर में भी चातुर्मास किया था। संवत् १९८९ में स्वर्गीया पूज्येश्वरी श्रीमती स्वर्ण श्री जी महाराज-साहब ने सर्व साधु साध्वियों की सम्मति से श्रीमती पुण्य-श्री जी म. सा. के साध्वी समुदाय का भार आपको अपने स्व हस्त से लिखित रूप में दे दिया था।

पूज्येश्वरी स्वर्ण श्री जी महाराज साहिबा का माघ कृष्णा नवमी को बीकानेर मे स्वर्गवास हो गया। तब आपको वीरपुत्र श्री आनन्द सागर जी महाराज साहब ने मेडता नगर मे बसन्त पचमी को प्रवर्तिनी पद पर अधित कर दिया और आपने शताधिक साध्वियो का नेतृत्व कुशलता पूर्वक ३४ वर्ष तक किया था। सम्वत् १९९४ के वर्ष मे आप श्री जयपुर पधारी और उसी वर्ष आन्त्रज्वर से पीडित हो गई। शरीर अत्यन्त निर्बल हो गया। वैद्य डाक्टरो ने विहार न करने का परामर्श दिया। और कहा कि विहार करेंगे तो ज्वर हो जायेगा। हृदय की गति भी बन्द हो सकती है।

आप श्री जयपुर मे ३० वर्ष तक विराजे। आपके जयपुर विराजने से श्रावक-श्राविकाओ मे ज्ञान, ध्यान, तप, त्याग आदि का लाभ लेते हुये अनेक प्रकार के तपस्याओ के उद्यापन किये। सम्वत्

१९९६ में बरखेड़ा तीर्थ का छ:री पालता संघ श्री मांगीलाल जी गोलेच्छा ले गये। जिसमें स्व. पू. दर्शन विजय जी म. सा. आदि त्रिपुटी मुनिराज तथा आप स्वयं भी पधारीं थीं। अनुमानतः ९ साध्वी जी और ४० श्राविकाएँ वर्षीतप वाली थी। दो हजार व्यक्ति साथ थे।

आपने विभिन्न प्रदेशों में विचर कर अनेक भव्यात्माओं को वैराग्य वासित किया था। और निष्पृह इतनी थी कि अपने नाम की एक भी शिष्या नही की। आपकी जीवन-चर्या भी अनुकरणीय थी। दिन-रात के २४ घंटे में १६ घंटे तो अप्रमत्त भाव से जाप ध्यान स्वाध्याय मौन में ही व्यतीत होते थे। किसी प्रकार की सांसारिक या गृहस्थ सम्बन्धी कोई बात कभी किसी से नहीं करती थीं। निर्मल चारित्र के कारण उन्हें वचन सिद्धि प्राप्त की थी। इसका अनुभव कई बार हुआ था। वे एक ऐसी अनुपम साध्वी थीं उनके जीवन में गाम्भीर्य, उदारता, चरित्र-

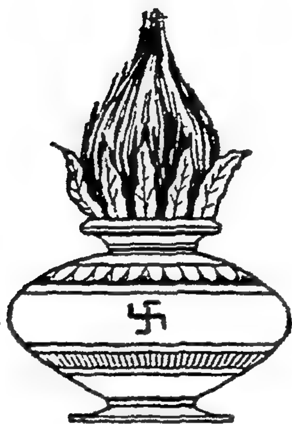
निष्ठा थी। साधु जीवन की आवश्यक क्रियाओ मे तत्परता, अप्रमत्तता और साध्वियों की समय पर सारणा वारणा प्रेरणा प्रति प्रेरणा चेतावनिया देना प्रेम से शिक्षाएँ देना आज भी हमे स्मरण है। वे एक-एक वाक्य शास्त्र सम्मत बोलती थी। ऐसी महान् त्यागी तपस्वीनी महापूज्य वर्य्या को कोटिश वन्दन।

सवत् २०२३ के चैत्र मास की कृष्णा दशमी को आपका मस्तिष्क की नस फटने से सध्या को स्वर्गवास हो गया। आपका अग्नि सस्कार बडे धूम धाम से मोहनवाडी मे किया गया। सुनाम-धन्या सुप्रसिद्ध आर्या रत्न स्व प्रवर्तिनी श्रीमती विचक्षण श्री जी म सा का भी उसी स्थान पर अग्नि सस्कार किया गया है। वही पर सुविशाल समाधि मन्दिर प्राय पूर्ण होने पर है।

पूज्य श्री का एक चरण रजकण मात्र। सज्जन श्री

१।
मा
दइ
तश
सा
दो

रम
इर
कि
दि
जा
वि
वा
के
अं
सा



॥ श्री ॥

❀ अनुक्रमणिका ❀

प्राकृतिक विभाग

संस्कृत विभाग

हिन्दी विभाग





श्री-प्रात:नित्यस्मरणसंग्रह

।। अथ नवकारमन्त्रः ।।

णमो अरिहंताण । णमो सिद्धाण । णमो आयरियाण णमो उवज्झायाण । णमो लोए सव्व-साहूण । एसो पच-णमुक्कारो, सव्व-पाव-पणासणो । मगलाणं च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ।।१।।

अथ सप्तस्मरणानि

अजित-शान्ति-स्तवन ।

अजिअ जिअ-सव्व-भय, संति च पसंत-सव्व गयपावं । जयगुरु संति-गुण-करे, दो

वि जिणवरे पणिवयामि ॥१॥ (गाहा) ववगय-मंगुल-भावे, तेहं विउल तव-निम्म-लसहावे । निरुवम-मह-प्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥२॥ (गाहा) सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं, सव्व-पाव-प्पसंतिणं । सया अजिअ-संतीर्णं, नमो अजिअसंतिणं ॥३॥ (सिलोगो) अजिअजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नाम-कित्तणं । तह य धिइ-मइ-प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥४॥ (मागहिआ) किरिया—विहि—संचिअ—कम्म—किलेस—विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महा-मुणि-सिद्धि- गयं । अजिअस्स य संति-महा मुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम

निव्वुइकारणय च नमसणय ॥५॥ (आलिंगणय) पुरिसा जई दुक्ख-वारण, जईअ विमग्गह सुक्खकारण । अजिअ संति च भावओ, अभयकरे सरण पवज्जहा ॥६॥ (मागहिआ) अरइ-रइ-तिमिर-विरहि-अमुवरय-जर-मरण, सुरअसुर-गरुलभुयग-वइ-पयय-पणिवइय । अजिअमहमवि अ सुनय-नय-निउणम-भयकर, सरणमुवसरिअ भुवि-विविज्ज–महिअ सयय-मुवणमे ॥७॥ (सगयय) त च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम-सत्तधर, अज्जव-मद्दव खंति-विमुत्ति-समाहिनिहि । सतिकरं पणमामि दमुत्तम-तित्थयर, सति-मुणी मम सति-समाहि-वर दिसउ ॥८॥ [सोवाणय] सावत्थि-पुव्व-पत्थिव च वर-

हत्थि–मत्थय–पसत्थ–वित्थिन्नसंथियं, थिर-सरिच्छ-वच्छं मयगल-लीलाय-माण-वरगंध-हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संथवारिहं। हत्थि-हत्थ बाहु धंत-कणग-रुअग-निरुवहय-पिंजरं पवर-लक्खणो वचिय सोम चारु–रूवं, सुइ–सुहमणा–भिराम परम रमणिज्ज वर देव दुंदुहि निनाय महुरयर सुह गिरं ॥९॥ [वेड्ढओ] अजियं जिआरिगणं, जिअ-सव्व-भयं भवोहरिउं। पणमामि अहं पयओ पावं पसमेउ मे भयवं ॥१०॥ (रासालुद्धओ) कुरु-जणवय-हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तओ महा चक्कवट्टि भोए महप्पभावओ जो बाव-त्तरि पुरवर सहस्स वर नगरनिगम-जणवय-वई बत्तीसा रायवर सहस्सा-णुयाय मग्गो।

चउदस वर-रयण-नव-महानिहि-चउ-सट्ठि-सहस्स-पवर-जुवईण सुन्दर-वई चुल-सीहय-गय-रह-सय सहस्स-सामी छन्नवइ-गाम-कोडि सामी आसीज्जो भारहम्मि भयव ॥११॥ (वेड्ढओ) त संति-संतिकर संतिण्ण सव्व-भया। संति थुणामि जिण संति विहेउ मे ॥१२॥ [रासा नदियं] इक्खाग विदेह नरीसर नरवसहा मुणि-वसहा नवसारय-ससि-सकलाणण विगय-तमा विहुअ रया। अजि उत्तम तेअगुणेहिं महा-मुणि-अमिअ-बला विउल कुला पणमामि ते भव-भय-मूरण जग सरणा मम सरण ॥१३॥ (चित्तलेहा) देव-दाणविंद-चदसूर-वद हट्ठ तुट्ठ-जिट्ठ-परम-लट्ठ-रूव धत-रुप्पपट्ट-सेयसुद्ध-निद्ध-धवल-दत-

पंति संति सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर, दित्त-तेअ-वंद धेअ सव्व-लोअ-भाविअ-प्पभा-वरोअ पइस मे समाहिं ॥१४॥ (नारायओ) विमल-ससिकलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर कराइरेअतेअं । तिअस वइ गणाइरेअ-रूवं, धरणि-धर-प्पवराइरे अ सारं ॥१५॥ (कुसुम-लया) सत्ते अ सया अजियं, सारीरे अ बले अजिअं । तवसंजमे अ अजिअं, एस अहं थुणामि जिणमजिअं ॥१६॥ (भुअंग-परिरिंगिअं) ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी । रूव-गुणेहिं पावइ न तं तिअस गण वई, सार गुणेहिं पावइ न तं धरणिधर वई ॥१७॥ (खिज्जिअयं) तित्थ वर पवत्तयं,

तम रय रहिअ, धीर जण थुअच्चिअ चुअ-
कलि-कलुसं । सति सुहप्पवत्तिय तिगरण
पयओ, सतिमह महामुणि सरणमुवणमे
॥१८॥ (ललिअय) विणओणय सिरि
रइअंजलि रिसि गण सथुअ थिमिअ विबुहा-
हिव धणवइ नरवइ थुअ महिअच्चिय बहुसो।
अइरु ग्गय सरय दिवायर समहिअ सप्पभ
तवसा, गयण गण विअरण समुइय चारण
वदिअ सिरसा ॥१६॥ (किसलयमाला) ॥
असुर गरुल परिवन्दिअ,किन्नरोरग णमसिअ।
देव कोडि सय सथुअ, समण सघ परिवदिअं
॥२०॥ (सुमुह) अभय अणह, अरय अरुय ।
अजिअ, अजिअ पयओ पणमे ॥२१॥
(विज्जुवि-लसिअ) ॥ आगया वर-विमाण-

दिव्व-करणग रह-तुरय-पहकर-सएहिं हुलिअं।
ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुण्डलं-
गय-किरीड-सोहन्त मउलि-माला ॥२२॥
(वेढ्ढओ)॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा वेर-
विउत्ता भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसिअ-संभम-
पिंडिअ सुट्ठु सुविह्मिय सव्व वलोघा।
उत्तमकंचणरयण-परूविअ-भासुर-भूसण-
भासुरिअंगा, गायसमोणय-भत्ति वसागयपं-
जलिपेसिअसीस पणामा ॥२३॥ (रयण-
माला)॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुण-
सेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं
सुरासुरा, पमुइया स-भवणाइं तो गया
॥२४॥ (खित्तयं) ॥ तं महामुणि-महंपि
पंजली, राग-दोष-भय-मोह-वज्जिअं। देव-

दाणव-नरिंद-वंदिअ, संति-मुत्तम-महातव नमे ॥२५॥ (खित्तय)॥ अवरतरवियारणि आहि ललिअ-हंस-वहु-गामिणिआहि । पीणसोणि थण-सालिणिआहि, सकल-कमल-दल लोअणिआहि ॥२६॥(दीवयं)॥ पीण-निरंतर-थण-भर-विणमिअ-गाय लयाहिं मणि-कंचण-पसि-ढिल-मेहल-सोहिअसोणि-तडाहिं। वर-खिंखिणि-नेउर-सतिलय-वलय-विभूसणियाहिं, रइकर-चउर-मणोहर-सुन्दर-दंसणियाहिं ॥२७॥ [चित्तखरा] ॥ देवसुन्दरीहिं पायवन्दिआहिं,वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंड-णोड्डण-पगारएहिं केहिं केहि वि अवगतिलय पत्त-लेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं,

भत्ति-सन्निविट्ठ-वंदणागयाहिं हुन्ति ते वंदिश्रा पुणो पुणो ॥२८॥ (नारायश्रो) ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ मोहं । धुअ-सव्व-किलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ (नंदिअयं) थुअ-वंदिअस्सा रिसि-गण-देव-गणेहिं, तो देव-बहूहिं, पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तम-सासणअस्सा, भत्ति-वसागयपिंडिअ-आहिं । देव-वरच्छरसावहुआहिं, सुर-वर-रइ-गुण-पंडिअआहिं ॥३०॥ (भासुरयं) ॥ वंस-सद्द-तंति-ताल-मेलिए, तिउक्खराभिराम सद्द-मीसए कए अ, सुई-समाणणे अ सुद्ध-सज्ज-गीअ-पाय-जाल-घंठिआहिं, वलय मेहला कलाव नेउराभिरामसद्द-मीसए कए अ, देव-नट्टिआहिं, हावभाव-विब्भम प्पगारएहिं,

नच्चिऊण अगहारएहिं वन्दिआ व जस्स ते सुविक्कमा कमा, तय तिलोय-सव्व-सत्त-सन्ति कारय, पसत-सव्वपाव-दोसमेस हं नमामि सति मुत्तमं जिण ॥ ३१ ॥ (नारायओ)॥ छत्त-चामर-पडाग-जूअ-जव-मडिआ, झय-वर-मगर-तुरग-सिरिवच्छ-सुलछणा। दीवसमुद्द मदर-दिसागय-सोहिआ, सत्थिय-वसह-सीह-सिरिवच्छसुलंछणा (रह-चक्क वरकिया)।३२।(ललिअय) सहाव-लट्ठा सम-प्पइट्ठा, अदोसदुट्ठागुणेहिं जिट्ठा। पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥ (वाणवासिआ) ॥ ते तवेण धुअ-सव्वपावया, सव्व लोअ हिअ मूल पावया सथुआ अजियसन्ति-पायया, हुतु मे सिवसुहाण

दायया ॥३४॥ (अपरान्तिका) ॥ एवं-तव बल-विउलं, थुअं मए अजिअ-संति जिणजुअलं ववगयकम्म रय मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥३५॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण-प्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ।३६। (गाहा) ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसाविअ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ (गाहा) पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अ अवस्स-भणिअव्वो। सोअव्वो सव्वेहिं उवसग्गनिवारणो एसो ॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ-कालंपि अजिय सन्तिथयं । न हु हुन्ति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासन्ति ॥३९॥ जइ

इच्छह परम-पय, अहवा कित्ति सुवित्थडा भुवणे । ता तेलुकुद्धरणे, जिणवयणे आयर कुणह ॥४०॥

इति श्रीबृहदजितशान्तिस्तवन प्रथम स्मरणम् ॥१॥



(२)

॥ लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ॥

उल्लासि-क्कम-नक्ख-निग्गय-पहा-दंड-च्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्व पयडं निव्वाणमग्गावलिं । कुन्दिन्दुज्जल-दंत-कन्ति-मिसओ नीहन्त-नाणंकुरु, केरे दोवि दुइज्ज-सोलस जिणे थोसामि खेमङ्करे ॥१॥ चरम-

जलहि-नीरं जो मिणिज्जञ्जलीहिं,खय-समय-समीरं जो जणिज्जा गईए । सयल-नहथलं वा लंघए जो पएहिं, अजियमहव सन्ति सो समत्थो थुणेउं ॥२॥ तहवि हु बहु-माणुल्लास-भत्ति-ब्भरेण,गुणकणमिव कित्तेहामि चिंता-मणि व्व । अलमहव अचिन्ताणन्त-सामत्थ-ओसिं, फलिहइ लहु सव्वं, वंछिअं णिच्छिअं मे ॥३॥ सयल जय-हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठ-दोघट्ट-थट्ठं । नमिर सुर किरी डुग्घिट्ट-पायारविन्दे, सयय-मजिअ-संती ते जिणंदेभिवन्दे ॥४॥ पसरइ वरकित्ती वढ्ढए देहदित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परमतित्ती होइ संसार-छित्ती, जिणजुअ-पयभत्ती होअ-

चितोरुसत्तो ।।५।। ललिअ-पयपयार सूरि-
दिव्व गहार, फुड घणरस भावोदार सिगार-
सार । अणिमिस रमणिज्ज दसणच्छेअ-
भीया, इव पुण मणिबधाकास नट्टोवयारं
।।६।। थुणह अजिअसती ते कयासेससती,
कणय रयपसगा छज्जए जाणि मुत्तो । सर-
भस-परि-रभारंभि-निव्वाण-लच्छी, घण-
थण-घुसिणिक्कुप्पक पिंगीकयव्व ।। ७ ।।
बहुविहनय-भग वत्थु णिच्च अणिच्च, सद-
सदणभिलप्पालप्पमेग अणेग । इय कुनय-
विरुद्धं सुप्पसिद्ध च जेसि, वयणमवयणिज्जं
ते जिणे सभरामि ।।८।। पसरइ तिय-लोए
ताव मोहधयार, भमइ जयमसण्ण ताव
मिच्छत्त-छण्ण । फुरइ फुड फलताणत-

णाणंसु-पूरो, पयडम-जिअसंतिज्भाण-सूरो न जाव ॥ ९ ॥ अरि-करि-हरि-तिण्हुण्हंवु-चोराहि-वाही, समर-डमर-मारी रुद्द-खुद्दो-वसग्गा । पलयमजिअ-संती-कित्तणे झत्ति जंती, निविडतर-तमोहा भक्खरालुंखि अव्व ॥१०॥ निचिअ दुरिअ दारु दित्त झाणग्गि-जाला-परिगयमिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं । कणयनिहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिहलच्छि गाढ़-संथंभि-अव्व ॥११॥ अडवि निवडियाणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरंताण गुत्ति-ट्ठियाणं । जलिअ-जलण जाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संति-नाहाजिआणं ॥१२॥ हरि-करि-परिकिण्णं पक्क-पाइक्क-पुन्नं, सयल-पुहवि-

रज्ज छड्डिउ आणसज्ज । तणमिव पडिलग्ग जे जिणा मुत्ति-मग्ग, चरणमणुपवन्ना हुतु ते मे पसन्ना ॥१३॥ छण-ससि-वयणाहिं फुल्ल-नित्तुप्पलाहिं,थणभर-नमिरोहिं मुट्ठि-गिज्झो-दरीहिं । ललिअ-भुअलयाहिं पीण-सोणि-त्थलीहिं, सय-सुर-रमणीहिं वंदिआ जेसि-पाया ॥ १४ ॥ अरिसकिडि-भकुट्ठ-ग्गंठि-कासाइसार, खयजरवणलूआसाससोसोद-राणि । नह-मुह-दसणच्छी-कुच्छि-कन्नाइ-रोगे, महजिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥१५॥ इअ गुरु-दुह-तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर-दुग थुत्त वच्छरे वा पवित्त । पढह सुणह सिज्झा एह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घ जेण घाएह सिग्घ ॥१६॥ इय

विजयाऽजिअसत्तु पुत्त ! सिरि-अजिअ-जिणे-सर !, तह अइराविस-सेण-तणय ! पंचम-चक्कीसर !, तित्थंकर ! सोलसमसंति ! जिण-वल्लह संथुअ !, कुरु मंगल मवहरसु दुरियमखिलंपि थुणंतह ॥१७॥

इति श्री लघु-अजितशान्तिस्तवनं द्वितीयं स्मरणं ।२।



(३)

॥ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

नमिऊण पणय-सुर-गण, चूढामणि-किरण रंजिअं मुणिणो । चलण-जुअलं

महाभय,-पणासण संथव वुच्छ॥१॥ सडिय-कर-चरण नह-मुह,-विवुड्ड-नासा विवन्नला-वण्णा । कुट्ठमहा-रोगानल,-फुलिंग-निद्दड्ढ-सव्वगा ॥२॥ ते तुह चलणा-राहण,-सलिल-जलिसेअ-वुड्ढिअच्छाया । वण-दव-दड्ढा गिरि पायवव्वपत्ता पुणो लच्छि ॥३॥ दुव्वाय-खुभिय-जलनिहि,-उब्भड-कलोल-भीसणारावे सभंत-भय-विसठुल,-निज्जामय-मुक्क-वावारे ॥४॥ अविदलियजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअ कूल । पासजिण-चलणजुअल, निच्च-चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धय वणदव जालावलिमिलिय-सयलदुम-गहणे । डज्झंत-मुद्धमियवहु,-भीसण,-रवभीसणम्मि वणे॥६॥ जगगुरुणो कमजुअल, निव्वाविय-

सयल-तिहुअणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥७॥ विलसंत-भोगभीसण,-फुरिआरुण-नयण-तरल-जीहालं । उग्गभुअंगं नवजलय,-सच्छहं भीसणायारं ॥८॥ मन्नंति कीडसरिसं, दूर-परिच्छूढ-विसमविसवेगा । तुह नामक्खरफुडसिद्ध मंत गुरुआ नरा लोए ॥९॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर,-पुलिंदसद्दूलसद्दभीमासु । भय-विहुर-वुन्नकायर,-उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु ॥१०॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह ! पणाम-मत्त वावारा । ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं ॥११॥ पज्जलिआनल-नयणं, दूर विआरिअ-मुहं महाकायं । नहकुलिस-घायविअलिअ,-गइंद-कुंभ-त्थलाभोअं॥१२॥

पणयससभमपत्थिव,—नह—मणि-माणिक्क-पडिअ-पडिमस्स । तुह-वयणपहरणधरा,सीह कुद्धपि न गणंति ।। १३ ।। ससि-धवलदंत-मुसलं, दीह-करुल्लाल-वुड्ढिउच्छाहं । महु-पिंगनयणजुअल, ससलिल नव-जलहरारावं ।।१४।। भीम महागइंद, अच्चासन्नपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलणजुअल मुणिवइ ! तुंग सम्मलीणा ।।१५।। समरम्मि तिक्ख-खग्गा,-भिग्घायपविद्धउद्धुय-कबंधे । कुंत-विणिभिन्न करि-कलहमुक्क सिक्कार-पउ-रम्मि ।।१६।। निज्जियदप्पुद्धररिउ,—नरिंद-निवहा भडा जस धवलं । पावंति पावपस-मिण ! पास-जिण ! तुह प्पभावेण ।१७। रोगजलज-लण—विसहर-चोरारि—मइंद-गय-

समिद्धा । सिद्धा ति जयपसिद्धा, हरणन्तु दुत्थाणि तित्थस्स ॥३॥ आयारमायरंता पंच-पयारं सया पयासन्ता । आयरिया तह तित्थं, निहयकुतित्थं पयासन्तु ॥४॥ सम्म-सुअ-वायगा वायगा य सिअवाय-वायगा वाए । पवयण-पडिणीय-कए वंणितु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणुज्जयसाहूणं जणिय-सव्वसाहज्जा । तित्थप्पभावगा ते हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥६॥ जेणाणुगयं णाणं निव्वाणफलं च चरणमवि हवइ । तित्थस्स दंसणं तं मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥७॥ निच्छम्मो सुअधम्मो, समग्गभव्वंगि-वग्ग-कयसम्मो । गुण-सुट्ठिअस्स संघस्स मंगलं सम्मसिह दिसउ ॥८॥ रम्मो चरित्तधम्मो,

सपाविग्र-भव्व सत्त-सिव-सम्मो । नीसेस-किलेसहरो, हवउ सया सयल-सघस्स ॥६॥ गुरग-गरण-गुरुरणो, गुरुरणो सिव-सुह-मइरणो कुरणतु तित्थस्स । सिरिवद्धमारणपहुपयडिअस्स कुसल समग्गस्स ।१०। जिय-पडिवक्खा जक्खा, गोमुह-मायग-गयमुहपमुक्खा । सिरि-वभसतिसहिआ, कय-नय-रक्खा सिव दितु ॥११॥ अवा पडिहयडिवा, सद्धिा सिद्धाइया पवयरगस्स । चक्केसरि-वइ-रुट्टा, सति-सुरा दिसउ सुक्खारिण ॥१२॥ सोलस विज्जा-देवीओ दितु सघस्स मगल विउल । अच्छुत्ता-सहिआउ, विस्सुअसुयदेवयाइ सम ॥१३॥ जिरणसासरण-कय रक्खा जक्खा चउवीस सासरणसुरावि। सुहभावा सतावतित्थस्स सया

पणासन्तु ।।१४।। जिण-पवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे । वेयावच्च-करावि अ तित्थस्स हवन्तु सन्तिकरा ।।१५।। जिण—समय—सिद्धसुमग्ग—वहिय — भव्वाण जणिय-साहज्जो । गोयरई गोअजसो, सपरि-वारो सिवं दिसउ ।१६। गिहिगुत्त-खित्त-जल-थल-वण-पव्वयवासी देवदेवीओ । जिणसा-सणट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ।।१७। दस-दिसिपाला सक्खित्तपालया-नव-ग्गहा स नक्खत्ता जोइणिराहु—ग्गह—काल-पासकुलिअद्धपहरेहिं ।१८। सहकाल-कंटएहिं सविट्ठि वच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसन्तु सव्वस संघस्स ।।१९।। भवणवइ वाणमंतर,-जोइसवेमाणिया य जे देवा ।

धरणिन्द-सक्क-सहिश्रा, दलन्तु दुरियाइ तित्थस्स ॥२०॥ चक्कं जस्स जलत, गच्छइ पुरश्रो पणा-सियतमोह। ततित्थस्स भगवश्रो, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥२१॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्ज वि सासण जए जयइ। सिद्धि-पह-सासण कुपहनासण सव्वभयमहण ॥२२॥ सिरि–उसभसेणपमुहा, हय-भय-निवहा दिसतु तित्थस्स । सव्वजिणाण गण-हारिणोऽणह वच्छिश्र सव्व ॥२३॥ सिरि-वद्धमाण-तित्थाहिवेण तित्थ समप्पिय जस्स सम्म सुहम्म-सामी, दिसउ सुहसयलसघस्स ॥२४॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि दिसतु-मयलसघस्स । इयर-सुरा वि हु सम्मं जिण-गणहर–कहिय–कारिस्स ॥२५॥ इय जो

पढइ तिसंझं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए । जिरणदत्तारणायट्ठिओ, सुनिट्ठिअट्ठो सुही होई ।।२६।।

।। इति श्रीगरणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थ स्मरणम् ।।



(५)

गुरुपारतंत्र्यनामकं पंचमं स्मरणम्

मय-रहियं गुरण-गरण-रयरण, सायरं सायरं परणमिऊरणं । सुगुरु-जरण-पारतंतं, उवहिव्व थुरणामि तं चैव ।।१।। निम्महिय-मोह-जोहा, निहय-विरोहा परणट्ठसंदेहा । परणयंगि-वग्ग-दाविअ सुह संदोहा सुगुरण-गेहा ।।२।। पत्त-

सुजइत्त-सोहा, समत्थ-पर-तित्थ जणिय-सखोहा । पडिभग्ग-मोह-जोहा, दंसिय-सुम-हत्थ-सत्थोहा ॥३॥ परिहरिअ-सत्त-वाहा, हय-दुहदाहा सिवंब-तरु-साहा । संपाविअ-सुह-लाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥४॥ सुगुण-जण-जणिय-पुज्जा सज्जो निरवज्ज-गहिय-पवज्जा । सिव-सुह-साहण-सज्जा, भव-गुरु-गिरि चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज-सुहम्म-पमुहा, गुण-गण-निवहा सुरिंद-विहिअ-महा । ताण तिसंझ नाम, नाम न पणासइ जियाण ॥६॥ पडिवज्जि-अजिण-देवो, देवायरिओ दुरंत-भवहारी । सिरिनेमि-चंद-सूरि उज्जो-यण-सूरिणोसुगुरु ।७। सिरि-वद्धमाण-सूरी, पयडोकय-सूरि-मंतमाहप्पो ।

पडिहय-कसाय-पसरो, सरय-ससंकुव्व सुह-जणश्रो ।८। सुह-सील-चोर-चप्परण-पच्चलो निच्चलो जिण-मयम्मि । जुगपवर-सुद्ध-सिद्धंत जाण-ओ पणय-सुगुणजणो ।।६।। पुरओ दुल्लह–महिव,–ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्काविआ रिऊणं, सीहेणव दव्व-लिंगि गया ।।१०।। दसमच्छेरयनिसि-विष्फु-रंतसच्छंदसूरि-मय-तिमिर । सूरेणव सूरि-जिणे,-सरेण हय-महिअ-दोसेण ।।११।। सुक-इत्त-पत्त कित्ति, पयडिअगुत्ती पसंत-सुहमुत्ती। पहय-परवाइ-दित्ती, जिणचंदजईसरो मंतो ।।१२।। पयडिअ-नवंग-सुत्तत्थ,–रयणकोसो पणासिअ-पओसो । भव-भीय-भविअ जण-मण,-कय संतोसो विगय-दोसो ।।१३।। जुग-

पवरागम-सार,-प्परुवणा-करण-वधुरो धणि-
अ । सिरिअभयदेव-सूरी, मुणि-पवरो परम-
पसमधरो ।१४। कय-सावय-सतोसो, हरिव्व
सारगभग्ग-सदेहो । गयसमय-दप्प-दलणो,
आसाइअ-पवर-कव्व-रसो ।।१५।। भीम-भव-
काणणम्मि दसिअ-गुरु वयण रयणसदोहो ।
नीसेस-सत्तगुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ
।।१६।। उवरिट्ठिअ-सच्चरणो, चउरणु-ओग-
प्पहाणसच्चरणो । असम-मयराय महणो,
उड्ढ-मुहो सहइ जस्स करो ।।१७।। दसिअ-
निम्मल-निच्चल,-दन्त-गणोगणिअ-सावओत्थ-
भओ । गुरु-गिरि-गुरुओ सूरहुव्व, सूरी जिण-
वल्लहो होत्था ।।१८।। जुगपवरागमपीऊस-
पाण-पीणिय-मणा कया भव्वा। जेण जिण-

वल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥१६॥ विप्फुरिय-पवरपवयण,-सिरोमणी वूढदुव्वह-खमो या । जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताण करो ॥ २० ॥ सच्चरिश्राणमहीणं, सुगुरुणं पारतंतमुव्वहइ। जयइ जिणदत्तसूरी, सिरि-निलश्रो पणय-मुणि-तिलश्रो ॥२१॥

॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामकं पंचमं स्मरणम् ॥



(६)

॥ अथ षष्ठं स्मरणम् ॥

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण-वीराणाणु-गामिसंघस्स । सिरि-पास-जिणो थंभण-पुर-

ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥१॥ गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअभव्व-सत्त-सुहा । सिरि-वद्धमाण-जिण-तित्थ-सुत्थय ते कुणन्तु सया ॥२॥ सक्काइणो सुरा जे, जिणवेया-वच्चकारिणो सति । अवह-रिय-विग्घ-सघा, हवन्तु ते सघसन्तिकरा ॥३॥ सिरि-थंभणय-ट्ठिय-पास-सामिपय-पउम पणय-पाणीण । निद्दलिय-दुरिय-विदो, धरणिंदो हरउ दुरिआइ ॥४॥ गोमुह-पमुक्ख जक्खा, पडिहय-पडिवक्ख-पक्ख-लक्खा ते । कय-सगुण-सघ-रक्खा, हवन्तु सपत्त-सिव-सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का–पमुहा, जिण–सासण–देव-या य जिण पणया सिद्धा-इया-समेया, हवन्तु सघस्स विग्घहरा ॥६॥ सक्काएसा सच्चउर-

पुरट्ठिओ वद्धमाण-जिण-भत्तो । सिरि-बम्भ-सन्ति-जक्खो, रक्खउ संघं पयत्तेण ।।७।। खित्त-गिह-गुत्त-सन्ताण–देस–देवा–हिदेवया ताओ । निव्वुइ-पुर-पहिआणं,भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ।८। चक्के सरि-चक्कधरा, विहिप-हरिउच्छिण्ण-कन्धरा धरिणयं । सिव-सरणि-लग्ग-संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ।।९।। तित्थवइ-वद्धमाणो, जिणेसरो, संगओ सुसं-घेण । जिणचन्दोऽभयदेवो, रक्खऊ जिण-वल्लहोपहु मं ।।१०।। सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो व्व हय-तिमिरो । जिण-चंदाऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ।११। गुरुजिण-वल्लह-पाए,-ऽभयदेव-पहुत्त-दायगे वंदे । जिणचन्द-जिणेसर-वद्धमाण-

तित्थस्स बुड्ढिकए ॥१२॥ जिणदत्ताणं सम्मं मन्नन्ति कुणन्ति जे य कारति । मणसा वयसा वउसा, जयतु साहम्मिश्रा ते वि ॥१३॥ जिणदत्त गुणे नाणाइणो सया जे धरन्ति धारिन्ति । दंसि-असिअ-वाय-पए, नमामि साहम्मिश्रा ते वि ॥१४॥

इति षष्ठ स्मरणम् ॥ ६ ॥



(७)

उवसग्गहरनामकं सप्तमं स्मरणम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्क । विसहर विस-निन्नास, मगल-

कल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गगह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिण-चंद ! ॥५॥

इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥७॥

समाप्तानि सप्त स्मरणानि ।



॥ अथ तिजयपहुत्तनाम स्मरणम् ॥

तिजयपहुत्तपयासय--अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताण ।समयक्खित्तठिआण, सरेमि चक्कं जिणंदाण ॥१॥ पणवीसा य असीआ, पणरस पन्नास जिणवर समूहो । नासेउ सयल दुरिअं, भविआण भत्तिजुत्ताण ॥२॥ वीसा पणयालावि य, तीसा पन्नहत्तरी जिणवरिंदा । गह-भूअरक्खसाइणि-घोरुवसग्ग पणासंतु ॥३॥ सत्तरि पणतीसावि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो । वाहिजलजलणहरिकरि-चोरारिमहाभय हरउ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह चेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं-देवासुरपणमिआ सिद्धा ।५। ॐ हरहुंह सरसुंस हरहुंह

तह य चेव सरसुंस । आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओ भद्दं ॥६॥ ॐ रोहिणि पन्नती, वज्जसिखला तह य वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ।७। गंधारी महाजाला माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता । माणसि महमाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥८॥ पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरी जिणाणं सयं । विविहरणाइवन्नो-वसो-हिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥ चउतीसअइसयजुआ अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयजत्तेणं ॥१०॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम—मरगयघणसन्निहं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥स्वाहा॥११॥

ॐभवरणवइ वाणवतर, जोइसवासी विमाण-
वासी अ । जे केवि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवस-
मंतु मम ॥ स्वाहा ॥१२॥ चंदणकप्पूरेण,
फलए लिहिऊण खालिअ पीअ । एगतराइ-
गहभूह-साइण्मिुग्ग पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ
सत्तरिसय जंत,सम्म मंत दुवारि पडिलिहिअ।
दुरिआरि विजयवंत,निब्भंत निच्चमच्चेह।१४।

॥ इति ॥



॥ अथ वृद्धनवकार ॥

॥ किं कप्पतरुरे अयाण चिंतउ मण-
भिंतरि, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो

वहुपरि ।। चित्तावली काज किसे देसांतर लंघउ. रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ।। चवदे पूरव सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे दुत्तर तरे संसार ।।१।। केवलि भासिय रीत जिके नवकार आराहै, भोगवि सुक्ख अणंत अंत परमप्पयसाहै ।। इस भाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु परि, इण भाणे देवलोक इंदपद पामे सुन्दरि ।। एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सबे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ।।२।। निय सिर ऊपर भाण मज्भ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अठदल सहित तिहां माहे कनकवर।।तिहां बेठा अरिहंतदेव पउमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पह-

रेवि पढम पय चिंते नियमरिण ।। निव्वारय चउ गइ गमरण पामिय सासय मुक्ख, अरिहत भारणे तुम लहो जिम अजरामर सुक्ख ।।३।। पनर भेय तिहा सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतरणे वन्ननिय सोहग साहे ।। रातो धोती पहर जपं सिद्धहि पुव्व दिसि, सयल लोय तिहि नरहि होइ ततखिरणसेंवसि। मूल-मन्न वशीकररण अवर सहू जगधद, मरिणमूलो ओषध करे बुद्धि हीरणजाचध ।।४।। दक्षिरण दिसि पलडी जपे नमो आयरिआरणं, सोवन-वन्नह सीस सहित उवएसहिनारण ।। रिद्धि-सिद्धि काररणे लाभ ऊपर जे ध्यावे, पहरे पीलावत्थ तेह नन वछिय पावें ।। इरण भारणे नव निधि हुवे रोग कदे नवि होय, गज रथ

हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ।५।
नीलवन्न उवझाय सीस पाढंता पच्छिम,
आराहिज्जे अंग पुव्व धारंत मणोरम ।।
पच्छिम दिस पंखडोय कमल ऊपर सुहझाण,
जोवो परमानंद तासु गय देवविमाण ।। गुरु
लघु जे रक्खे विदुर तिहां नर बहु फल होइ,
मन सूघे बिण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ
।।६।। सर्व्व साधु उत्तर विभाग सामला
वइठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित्र गुण
जिठा ।। मण वयण काएहिं जपे जे एके
झाणे पंचवन्न तिहां नाण झाण गुण एह
पमाणे ।। अनन्त चोवीसी जग हुइए होसी
अवर अनंत, आदि कोइ जाणे नहीं इण नव-
कारह मंत ।।७।। एसो पंच नमुक्कारो पद

दिसिअगर्णोहि, सव्व पावप्पणासणो पद जपे-नेरेहि ।। वायव दिसि झाएह मगलाण च सव्वेसि, पढम हवइ मगल ईसाण पएसि ।। चिहु दिसि चिहु विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ।।८।। इण प्रभाव धरणिद हुओ पायालह सामी, समलीकुमर उपन्न भिल्ल सुर लोयह गामी ।। सवल कवल वे वलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नव-कारहि जपे ।। शिवकुमार मन वछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सोधलो इण नवकार प्रमाण ।।९।। छींके वैठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुइ फूल माल नवकारह नामी ।। वाधुरआचारत बाल जल

नदी प्रवाहे, बांध्यों कंटही उयर मंत्र जपियो मनमांहे ।। चित्या काज सवे सरे इरत परत विश्वास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ।।१०।। चौर धाड संकट टले राजा वसि होवे, तित्थंकर सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ।। साइण डाइण भूत प्रेत वेताल न पुहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे ।। कुठ जलोदर रोग सवे नासै एणही मंत, मयणासुन्दरितणी परे नव पय झाण करंत ।।११।। एक जीह इण मंत्र-तणा गुण किता बखाणुं, नाणहीण छउ-मच्छ एह गुण पार न जाणूं ।। जिम सत्तुं-जय तित्थराउ महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ।। तित्थंकर

गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अत न को लहे गुण गिरुवो नवकार ।।१२।। अड सपय नवपय सहित इगसठ लहु अक्खर, गुरु अक्खर सत्तंव इह जाणो परमक्खर ।। गुरु जिण वल्लह सूरि भणे सिव सुक्खह, कारण, नरय तिरय गइ रोग सोग बहु-दुक्ख निवारण ।। जल थल महियल वनगहण समरण हुवे इक चित्त, पच परमेष्ठि मत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ।।१३।। इति



।। अथ अयतिहुअणस्तोत्र लिख्यते ।।

।। जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्न तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस

दुरिअक्करि के सरि ।। तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंभणय पुरट्ठिअ ।। १ ।। तइं समरंत लहंति झत्तिवर पुत्त कलत्तहिं धण्ण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जणभुंजहि रज्जहि ।। पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासप साइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खहि कुण महजिण ।।२।। जरजज्जर परिजुण्ण कण्णनट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीणखएणखुण्ण नरसल्लिय सूलिण ।। तुह जिणसरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव. जय धण्णंतरि पास महवि तुह रोगहरो भव ।।३।। विज्जाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्जइ तुह नामिण ।। तुह

नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, त तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥४॥ खुद्द पवत्तइ मत तत जताईविसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्ग विगजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दयकरि, दुरिअइ हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥५॥ तुह आणाथभेइ भीमदप्पुद्धुर सुरवर, रक्खस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्दपसुजोइणि जोइय इय तिहुअणअविलघिआण जय पास सुसामिअ ॥६॥ पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थभत्तिब्भर निब्भर, रोमंचचिअचारुकाय किण्णरनरसुरवर ॥ जसुसेवहि कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु, सोभुवणत्तयसामि पास महमद्दउ

रिउबलु ॥७॥ जय जोइअंमणकमलभसल-
भय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद
भुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारि-
वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंभणयट्ठिअ
पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विह-
वण्णुअवण्णु सुण्णु वण्णिउ छप्पण्णहि, मुक्ख-
धम्मु कामत्थकाम नर नियनियसत्थहि ॥
जं झायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ,
सो जोइ अमण कमलभसलसुह पास पवद्धउ
॥९॥ भय विब्भल रणझणिरदसण थरह-
रिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसण्णुसुण्णु-
गग्गरगिरकरुणय ॥ तइं सहसत्तिसरंति हुंति
नरनासिअ गुरुदर, महविज्जविसज्जसइ पास
भय पंजरकुंजर ॥१०॥ पइं पासवियसंत-

नित्तपत्ततपवित्तिय, वाहपवाहपव्वूढरूढ दुहदाहसुपुलइय ।। मण्णाहिमण्णूसउण्ण पुण्णप्पाण सुरनर, इअ तिहुअण आणंदचंद जय पास जिणेसर ।।११।। तुह कल्लाणमहेसुघट टकारवपिल्लिअ, वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवर गजुल्लिअ ।। हल्लुप्फलिअ पवत्तयति भुवणेहि महूसव, इय तिहुअण आणंदचंद जय पाससुहुब्भव ।। १२ ।। निम्मल केवल किरणनियरविहुरिअ तमपहयर, दसिअ सयलपयत्थसत्थवित्थरिअ पहाभर ।। कलिकलुसिअ जण घूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ।।१३।। तुह समरणजलवरिससित्त माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थवोह कदल

दलरेहिंणि ।। जायइ फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि पास मइं मम ।।१४।। कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणु दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणु ।। जय जंतुहजणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्मु धम्मु सो जयउ पास जय जंतु पियामह ।।१५।। भुवणारण्णनिवास दरिअपरदरिसणदेवय, जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय । तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठ अविसंठुल चिट्ठहिं, इय तिहुअणवणसिह पास पावाइं पणासहि ।।१६।। फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल फलिणी कंदलदलतमाल निल्लुप्पलसामल ।। कमठासुर उवसग्गवग्ग संसग्ग अगंजिअ, जय

पच्चक्खजिरणेस पास थभरणय पुरट्ठिअ ।।१७।।
महमणुतरलुपमाणनेय वायावि विसठलु,
नियतणुरवि अविरणयसहाव आलसविहिलथलु
।। तुहमाहप्पुपमाणुदेव कारुण्ण पवित्तउ,
इय मइमाअवहीरिपासपालहिविलवतउ।१८।
किंकिकप्पिउरोयकलुणु किंकिवनजपिउ, किं
वनचिट्ठिउकिट्ठुदेवदीरणयमविलविउ ।। कासु-
नकियनिफललल्लरिलअह्मे हिंदुहत्तइ, तहवि न
पत्तउताणु किंपि पइं पहु परिचत्तइ ।।१६।।
तुहुं सामिह तुहु माय बप्पु तुहु मित्तपियकरु,
तुहु गइतुहु मइ तु हिज तारण तुहु गुरु खेम-
करु ।। हउ दुहभरभारिअवराउ राउलनिब्भ-
ग्गउ, लीरणउ तुह कमकमल सरणजिरण-
पालहि चगउ ।।२०।। पइंकिविकयनीरोय-

लोयकिविपावियसुहसय, कि विमइं मंतमहं तकेवि किविसाहियसिवपय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइं अवहीरहिकेरणपाससरणागयवच्छल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्फण्ण पओयण, तुहुं जिण पासपरोवयार करणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम चित्तवित्तिनयनिदिअसममण, मा अवहीरिअजुग्गओविमइं पासनिरंजण ॥२२॥ हउं बहुविहदुहतत्तगत्तुतुहं दुहनासणपरु, हउंसुयणहकरुणि क्कठाणु तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउं जिण पासअसामिसालु तुहं तिहुअणसामिअ, जं अवहीररि मइं झखंतइय पासन सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विभागनाहनहुजोअणतुहसम, भुवणुवयार-

सहावभाव करुणारससत्तम ।। समविसमह्-
किघणु नियइ भुविदाहुसमतउ, इय दुहवधव
पासनाह मइ पाल थुणतउ ।।२४।। नयदीरण-
हदीरा यमुएवि अण्णुविकिजुग्गय, ज जोइवि-
उवयारुकरइउवयारसमुज्जय ।। दीरणह दीणु-
निहीणुजेरणतुहनाहिरण चत्तउ, तो जुग्गउ-
अहमेव पासपालहिमइ चंगउ ।।२५।। अह-
अण्णुविजुग्गयविसेसुकिविमण्णहि दीरणह,
ज पासिविउवयारुकरइ तुहनाह समग्गह ।।
सुचिअकिल कल्लाणुजेरण जिरण तुम्ह पसीयह
किं अण्णरिण तचेव देव मामइ अवहीरह
।।२६।। तुह पत्थरण नहु होइ विहलु जिरण-
जारण उ किं पुरण, हउ दुक्खिउ निरुसत्तच-
त्तदुक्कहु उस्सु यमरण ।। त मणगउ निमिसेण

एउ एउविजइ लब्भइ, सच्चं जं भुक्खियव-
सेण किं उंबरु पच्चइ ॥२७॥ तिहुअणसा-
मिअ पासनाह मइं अप्पुपयासिउ, किज्जउ जं
नियरूवसरि सुनमुणउवहुं जंपिउ ॥ अण्णु ण
जिणजग्गितुहसमोविदक्खिन्नु दयासउ,जइ अव-
गिण्णसि तुंहजिअहहर्हिकहोइस हयासउ ।२८।
जइ तुहरूविण किणविपेअ पाइणवेलंवियउ,
तविजाणउजिणपास तुम्ह हउंअंगीकरिअयउ॥
इयमहइच्छिउ जं न होइ सातुहओहावणु,
रक्खंतह नियकित्तिणे य जुज्जइअवहीरणु
॥२९॥ एहमहारिहजत्तदेवइहुन्हवणमहूसउ
जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणि-
सिद्धउ ॥ एम पसीहसुपासनाहथंभणय-
पुरट्ठिअ, इय मुणिवरुसिरि अभयदेव विण्ण-

वइ अणिदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तभनक-
तीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥



नवग्रह स्तुतिगर्भितं

दोसावहार स्तोत्रम् ।

दोसावहारदक्खो, नालियायार वियासि गोपसरो । रयणत्तयस्स जणओ, पासजिणो जयउ जयचक्खू ।।१।। कयकुवलय पडिबोहो, हरिणंकिय विग्गहो कलानिलओ । विहियारविंदमहणो, दियराओ जयउ पासजिणो ।२। कंतीइ निज्जिणंतो, सिंदूरं पुहविनंदणो कूरो। जयजंतु अभयवक्को, सुमंगलो जयउ पहुपासो ।।३।। उप्पलदल नीलरुई, हरिमंडल संथुओ इलाणंदो । रयणीयर दारओ मह, बुहो पसीय(ए)ज्ज पासजिणो ।।४।। नाहियवायदियढ्ढो नायत्थो णायराय कयपूओ ।

सिरिपासनाहदेवो, देवायरिश्रो सुह दिसउ ॥ ५ ॥ रायावट्ट समुज्जल–तणुप्पह मंडलो महाभूई । असुरेहिं नमिज्जतो, पासजिणिंदो कवी जयउ ॥६॥ तिमिरासि समारूढो, सतो दुक्खावहो जयम्मि थिरो । बहुलतमा सरि सरीरो, जयचक्खुसुश्रो जयउ पासो ॥७॥ कवलीकय दोसायरमायडरह श्रहो तणुविमुक्कं । लोयाभरणीभूय, पासजिण सत्तम सरह ॥८॥ दुरिश्राइं पासनाहो, सिहावमाली नहोभवणकेऊ । दूर तमरासीश्रो, सत्तमट्ठाणट्ठिश्रो हरउ ॥ ९ ॥ इय नवगहथुइगब्भ, जिणपहसूरिहिं गु फिश्र थवण । तुह पास ! पढइ जो तं, श्रसुहावि गहा न पीडंति ॥१०॥



।। अथ संतिकर स्तवनं ।।

।। संतिकरं संतिजिरणं, जगसररणं जयसि रीइ दायारं ।। समरामि भत्त पालग, निवारण गरुडकय सेवं ।। १ ।। ॐ सनमो विप्पोसहि पत्तारणं संति सामिपायारणं,भ्रौं स्वाहा मंतेरणं, सव्वासिव दुरिअ हररणारणं ।।२।। ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धि पत्तारणं ।। सौँ ह्रीं नमो सव्वोसहि पत्तारणं च देइसिरीं ।।३।। वारणी तिहु अरण सामिरिण, सिरि देवी जक्खराय गरिणपिडगा ।। गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिरणभत्ते ।। ४ ।। रुक्खंतु मम रोहिरणी, पन्नती वज्जसिखलाय सया ।। वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि

महाकाली ॥५॥ गोरी तह गंधारी, महजाला माणवीय वइरुट्टा ॥ अच्छुना माणसिया, महामाणसियाओ देवीओ ॥ ६ ॥ जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेसु तुंवरु कुसुमो ॥ मायग विजय अजिआ, वभो मणुओ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंधव तहय जक्खिंदो ॥ कुवेर वरुणो भिउडी, गोमेहो पासमायगो ॥८॥ देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरी कालि महाकाली ॥ अच्चुअ संता जाला, सुतारया सोअ सिरिवच्छा ॥ ६ ॥ चंडा विजयंकुसि, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी ॥ वइरुट्ट छुत्तगंधारि, अंब पउमावई सिद्धा ॥१०॥ इअ तित्थरक्खणरया, अन्ने वि सुरासुरी

(१)

।। अथ श्रीभक्तामर-स्तोत्रम् ।।

भक्तामर-प्रणत मौलि-मणि-प्रभाणा-मुद्द्योतक दलित-पाप-तमो-वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिन ! पाद-युग युगादा,—वालम्बन भवजले पतता जनानाम् ।।१।। य सस्तुत· सकलवाङ्मय-तत्त्व-वोधा,-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभि सुरलोकनाथै । स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्त-हरैरुदारै, स्तोष्ये किलाहमपि त प्रथम जिनेन्द्रम् ।।२।। युग्मम् ।। बुद्धया विनापि विबुधार्चितपादपीठ ! स्तोतु समुद्यत-मति-विगत-त्रपोऽहम् । वाल विहाय जल-सस्थित-मिन्दु-विम्ब,-मन्य क इच्छति जन· सहसा

सिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छत् ? ॥ ११ ॥ यैः शान्तराग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत ! । तावन्त एव खलु तेऽप्यरणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूप-मस्ति ॥१२॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि, निःशेष-निर्ज्जितजगत्त्रितयोपमानम् । विम्बं कलङ्क-मलिनं निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु पलाशकल्पम् ।१३। सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कलाकलाप,-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघ-यन्ति । ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं, कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ! ।१४। चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभिर्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् । कल्पान्त-

कालमरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रि-
शिखरं चलित कदाचित् ? ॥१५॥ निर्धूम-
वर्त्तिपवर्त्तिर्जिततैलपूर, कृत्स्न जगत्त्रयमिदं
प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिता-
चलाना, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ? जगत्प्र-
काश. ॥ १६ ॥ नास्त कदाचिदुपयासि न
राहुगम्य', स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदर-निरुद्धमहाप्रभाव, सूर्याति-
शायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र लोके ॥ १७ ॥
नित्योदयं दलितमोह-महान्धकार, गम्य न
राहु-वदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव
मुखाब्जमनल्प-कान्ति, विद्योत-यज्जगदपूर्व्व-
शशाङ्क-विम्वम् ॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिना-
ऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु

तमस्सुनाथ ? । निष्पन्न-शालि-वनशालिनि जीव-लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भारनम्रैः ? ॥१९॥ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणांशतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्ररश्मि, प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम् ।२२। त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस, मादित्य-वर्णममलं तमसः

परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव पदस्य मुनीन्द्र ! पन्था ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनंगकेतुम् । योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात् त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात् । धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमः क्षितितलामल-भूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥२६॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै,-स्त्वसंश्रितो निरवकाशतया मुनीश !

दोषै-रुपात्त—विविधाश्रय—जात-गर्वैः, स्वप्ना-
न्तरेऽपि न कदाचिद-पीक्षितोऽसि ।। २७ ।।
उच्चै रशोक-तरुसंश्रितमुन्मयूख,-माभाति रूप-
ममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरण-
मस्ततमो—वितानं, बिम्बं रवेरिव—पयोधर-
पार्श्ववर्त्ति ।। २८ ।। सिंहासने मणि-मयूख-
शिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकाव-
दातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशुलता-वितानं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ।। २९ ।।
कुन्दावदात-चलचामर-चारुशोभं, विभ्राजते
तव वपुः कलधौत-कान्तम् । उद्यच्छशाङ्क-
शुचि-निर्झरवारिधार—मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव
शातकौम्भम् ।।३०।। छत्र-त्रयं तव विभाति
शशाङ्ककान्त, मुच्चैःस्थितं स्थगित-भानुकर-

प्रतापम् । मुक्ताफल प्रकरजालविवृद्धशोभ,
प्रख्यापयत् त्रिजगत परमेश्वरत्वम् ॥३१॥
गम्भीर ताररव पूरित दिग्विभागस्त्रैलोक्य
लोक शुभ सगम भूतिदक्ष । सद्धर्मराजजय-
घोषणघोषक सन्, खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते
यशस. प्रवादी ॥३२॥ मन्दार सुन्दर नमेरु
सुपारिजातसन्तानकादि कुसुमोत्कर वृष्टि
रुद्धा । गन्धोद् विन्दु शुभ मन्द मरुत् प्रपाता,
दिव्यादिव पतति ते वचसा ततिर्वा ॥३३॥
शुम्भत्प्रभावलय भूरि विभा विभो स्ते, लोक-
त्रयद्युतिमता द्युति माक्षिपन्ति । उद्यद्दिवाकर
निरन्तर भूरि सख्या दीप्त्या जयत्यपि निशा-
मपि सौम्य सौम्या ॥३४॥ स्वर्गापवर्ग गम
मार्ग विमार्गरोष्ट सद्धर्मतत्त्व कथनैक पटु

स्त्रिलोक्या । दिव्य ध्वनिर्भवति ते विशदार्थ सर्वभाषा स्वभाव परिणाम गुणैः प्रयोज्यः ।।३५।। उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ति, पर्युल्लसन्नख–मयूख–शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ।।३६।। इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र! धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकाशिनोऽपि ।।३७।। श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोल-मूल,-मत्त-भ्रमद्-भ्रमर,-नाद-विवृद्धकोपम् । ऐरा-वताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदा श्रितानाम् ।।३८।। भिन्नेभकुम्भ-गलदुज्ज्वल–शोणिताक्त, – मुक्ताफल–प्रकर

भूषित-भूमिभाग । बद्ध-क्रम क्रम-गत हरि-
णाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम-युगाचल-सश्रित
ते ।। ३९ ।। कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-
कल्प, दावानल ज्वलित-मुज्ज्वलमुत्स्फुलि-
ङ्गम् । विश्व जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्त,
त्वन्नामकीर्तनजल शमयत्यशेषम् ।। ४० ।।
रक्तेक्षण समदकोकिल-कण्ठनील, क्रोधोद्धत
फणिनमुत्फणमापतन्तम् । आक्रामति क्रम-
युगेन निरस्तशङ्कस्-त्वन्नामनाग-दमनी हृदि
यस्य पु स' ।।४१।। वल्गत्तुरग-गजगर्जित-
भीम-नाद-माजौ बल बलवतामपि भूपतीनाम्
उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्ध, त्वत्की-
र्तना-त्तम इवाशु भिदामुपैति ।। ४२ ।।
कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह, वेगाव-

तार-तरणातुरयोधभीमे। युद्धे जयं विजित-दुर्ज्जय-जेय-पक्षास्-त्वपादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण-नक्रचक्र,-पाठीनपीठ-भयदोल्वण-वाडवाग्नौ रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यानपात्रास्--त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४४ ॥ उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार भुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः। त्वत्पाद-पङ्कज-रजोऽमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य रूपाः ॥४५॥ आपाद-कण्ठ-मुरु-शृंखल-वेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्टजंघा। त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४६ ॥ मत्तद्विपेन्द्रमृगराज-दवानलाहि,-

सग्राम-वारिधिमहोदर-बन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भय भियेव,यस्तावक स्तवमिम मतिमानधीते ।४७। स्तोत्रस्रज तव जिनेन्द्र ! गुर्णैनिवद्धा, भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठगता-मजस्र, त मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

॥ इति श्री भक्तामरस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥



॥ अथ श्रीकल्याणमन्दिर स्तोत्रम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भीता-भयप्रदमनिन्दितमङि्घ्रपद्मम् । ससारसागर-निमज्जदशेष जन्तु, पोतायमानमभिनम्य

जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरि-
माम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्वि-
धातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो
स्तस्याह-मेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥
युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितु स्व-
रूपमस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः? ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं
प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मे ? ॥३॥ मोह-
क्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान्
गणयितु न तव क्षमेत । कल्पान्तवान्तपयसः
प्रकटोऽपि यस्मान्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्न-
राशिः ? ॥४॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ !
जडाशयोऽपि, कर्त्तु स्तवंलसदसंख्यगुणाकर-
स्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य,

विस्तीर्णता कथयति स्वधियाऽम्बुराशे ?
।५। ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !,
वक्तु कथभवति तेषु ममावकाश ?। जाता
तदेवमसमीक्षितकारितेय, जल्पन्ति वा निज-
गिरा ननु पक्षिणोऽपि ।।६।। आस्तामचिन्त्य-
महिमा जिन ! सस्तवस्ते, नामापि पाति
भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थ-
जनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरस सरसोऽनि-
लोऽपि ।। ७ ।। हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो !
शिथिलीभवन्ति, जन्तो क्षणेन निविडा अपि
कर्मबन्धा । सद्यो भुजगममया इव मध्यभाग
मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ।।८।।
मुच्यन्त एव मनुजा सहसा जिनेन्द्र !, रौद्रै-
रुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि

स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥ त्वं तारको जिन ! कथं भविनां ? त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नूनमन्तर्गस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन । विध्यापिता हुजभुजः पयसाऽथ येन पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ? ॥११॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः। जन्मोदधिं लघु तरंतत्यतिलाघवेन? चिन्त्यो न हंत महतां यदि वा प्रभावः ।१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो ! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ? ।

प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ? ॥१३॥ त्वा योगिनो जिन ! सदा परमात्म-रूप-मन्वेषयति हृदयाम्बुजकोशदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य-दक्षस्य सभवि पद ननु कर्णिकाया ? ॥१४॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविन' क्षणेन, देह विहाय परमात्म-दशा व्रजन्ति । तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदा ॥१५॥ अत सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्व, भव्यै कथ तदपि नाशयसे शरीरम् ? । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रह प्रशमयति महानुभावा ॥१६॥ आत्मा मनीषिभिरय त्वदभेदबुद्धया, ध्यातो जिनेन्द्र !

भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ? ॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते ? विविधवर्णविपर्ययेण ॥१८॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावादास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ?॥१९॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !, गच्छंति नूनमध एव हि बंधनानि ॥२०॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः,

पीयूषता तव गिर समुदीरयन्ति। पीत्वा यत परमसमदसगभाजो, भव्या व्रजति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन्! सुदूरमवनम्य समुत्पततो, मन्ये वदति शुचय सुरचामरौघा.। येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतय. खलु शुद्धभावा ॥२२॥ श्याम गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न—सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्। आलोकयति रभसेन नदतमुच्चै—श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव। सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!, नीरागता व्रजति को न सचेतनोऽपि? ॥२४॥ भो भो प्रमादमव-

धूय भजध्वमेन—मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभ सुरदुन्दुभिस्ते ।। २५ ।। उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र—व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ।।२६।। स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कांतिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन । माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ।। २७ ।। दिव्यस्रजो जिन ! नमत्त्रिदशाधिपाना—मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् । पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ।।२८।। त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपरां-

मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठ लग्नान्। युक्त हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्र विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्य ॥२९॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्व, किंवाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! । अज्ञानवत्यपि सदेव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतु ॥३०॥ प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि । छायापिऽतैस्तव न नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमोभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्ज्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीम, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशवि-

कृताकृतिमर्त्यमुण्ड-प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रति भवंतमपीरितो यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसंध्य--माराधयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश ! मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥३५॥ जन्मांतरेऽपि तव पाद युगं न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतन महं मथिताशयानाम् ॥३६॥ नूनं न मोहतिमि-

रावृतलोचनेन, पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलो-
कितोऽसि । मर्माविधो विधुरयति हि माम-
नर्था , प्रोद्यत्प्रबधगतय. कथमन्यथैते ? ।३७।
आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नून न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव ! दु खपात्र,
यस्मात्क्रिया प्रतिफलन्ति न भावशून्या
॥ ३८ ॥ त्व नाथ ! दु.खिजनवत्सल हे
शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिना वरेण्य ।
भक्त्या नते मयि महेश ! दया विधाय,
दु खाकुरोद्दलनतत्परता विधेहि ॥ ३९ ॥
नि सङ्ख्यसंख्य शरण शरण शरण्य-मासाद्य
सादितरिपुप्रथितावदातम् । त्वत्पादपङ्कजमपि
प्रणिधानवध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन!

हा हतोऽस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखिलवस्तुसार !, संसारतारक विभो ! भुवनाधिनाथ । त्रायस्व देव ! करुणाहृद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि संततसंचितायाः। तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकितांगभांगाः। त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३॥ जननयनकुमुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा। ते विगलित-

मलनिचया, अचिरान्मोक्ष प्रपद्यन्ते ॥४४॥ युग्मम् ।

॥ इति श्री कल्याणमन्दिरस्तोत्र सपूर्णम् ॥



॥ अथ बृहद् शान्ति ॥

भो भो भव्या ! शृणुत वचन प्रस्तुत सर्व्वमेतत्, ये यात्राया त्रिभुवनगुरोरार्हताभक्तिभाज । तेषा शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा,–दारोग्य श्रीधृति—मतिकरी क्लेशविध्वस-हेतु ॥१॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत–विदेहसम्भवाना, समस्त–तीर्थकृता जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तर-मवधिना

विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टा-चालनानन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शान्ति-मुद्घोषयति, ततोऽहं कृता नुकारमिति कृत्वा—'महाजनो येन गतः स पंथाः' इति भव्य जनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजायात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरम्, इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां २ स्वाहा ।। ॐ पुण्याहं २, प्रीयन्तां २, भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः, सर्वदर्शिनः त्रैलोक्यनाथाः त्रैलोक्य महिताः, त्रैलोक्य-पूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्योतकराः ।। ॐ श्री केवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३,

महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ६, सुतेज १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताघ १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १६, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, सप्रति २४ एते अतीतचतुर्विशति-तीर्थंकरा ॥

ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, सम्भव ३, अभिनन्दन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चन्द्रप्रभ ८, सुविधि ६, शीतल १०, श्रेयास ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुन्थु १७, अर १८, मल्लि १६, मुनिसुव्रत २०, नमि

वर्त्तमान-जिनजनन्यः ॥

ॐ श्री गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुम्बुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गन्धर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, भृकुटी २१, गोमेध २२. पार्श्व २३, ब्रह्मशान्ति २४, इति वर्त्तमानजिनाःयक्षाः ॥

ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शान्ता ७, भृकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चण्डा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कन्दर्पा १५, निर्वाणी १६, बला

१७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गान्धारी २१, अम्बिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४, इति वर्त्तमान–चतुर्विंशतितीर्थंकर-शासनदेव्या ।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति-कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी–मेधा–विद्या-साधन–प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्रा. । ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गान्धारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एता षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्याय-

प्रभृति चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमण-संघस्य शान्ति-र्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु। ॐग्रहाश्चंद्र-सूर्याऽगारकबुध-बृहस्पति-शुक्र- शनैश्चर-राहु-केतु-सहिताः सलोकपाला सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य स्कन्द-विनायका ये चान्येऽपि ग्राम-नगर-क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां २ अक्षीण-कोश-कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।। ॐ पुत्रमित्रभ्रातृ-कलत्र-सुहृत्-स्वजन-संबन्धि-बन्धु-वर्गसहितानित्यं चामोद-प्रमोद-कारिणो भवन्तु । अस्मिञ्च भूमण्डले आयतन-निवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दुर्भिक्ष-दौर्मन-स्योपशमनाय शान्तिर्भवतु।। ॐ तुष्टि-ऋद्धिवृद्धि-मांगल्योत्सवा भवन्तु । सदा

प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यन्तु, शत्रव पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।। श्रीमते शान्तिनाथाय नम शान्तिविधायिने । त्रैलोक्य-श्यामराधीश मुकुटाभ्यर्चिताघ्रये ।।१।। शान्ति शान्तिकर श्रीमान् शान्ति दिशतु मे गुरु शान्तिरेव सदा तेषा येषा शान्तिर्गृहे गृहे ।।२।। ॐ उन्मृष्टरिष्ट–दुष्ट–ग्रह–गति दु स्वप्न-दुर्निमित्तादि । सपादित-हित-सपद् नाम-ग्रहण जयति शान्ते ।।३।। श्रीसघ-पौर जन-पद,–राजाधिप–राजसन्निवे–शानाम् । गोष्ठिक–पुरमुख्याणा, व्याहरणैर्व्याहिरेच्छान्तिम् ।।४।। श्री श्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौर–लोकस्य शान्तिर्भवतु, श्री जन पदाना शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपाना

शान्तिर्भवतु, श्रीराज संनिवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानाम् शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा-स्नात्रावसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुम-चन्दन-कर्पूरागुरु-धूप-वास कुसुमाञ्जलि-समेतः स्नात्रपीठे श्री संघसमेतः शुचिः शुचिवपुः पुष्पवस्त्र-चन्दनाभरणालंकृतः, चन्दनतिलकं विधाय पुष्प मालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्ति-पानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्प-वर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ।। १ ।। अहं तित्थयर-माया, सिवादेवी तुम्ह-नयर-निवा-

सिनी अम्ह सिव तुम्ह सिव, असुहोवसम सिवं भवतु स्वाहा ॥ २ ॥ शिवमस्तु सर्व-जगत', परहित-निरता भवन्तु भूत-गणा । दोषा प्रयान्तु नाश, सर्वत्र सुखीभवतु लोका ॥३॥ उपसर्गा. क्षय यान्ति, छिद्यन्ते विघ्न-वल्लयः । मन प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमगलमागल्य सर्वकल्याण-कारणम् । प्रधान सर्वधर्माणा जैन जयति शासनम् ॥५॥

॥ इति वृहद्शान्ति समाप्त ॥



॥ अथ जिनपञ्जर स्तोत्रम् ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्‍भ्यो नमोनम । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनम । ॐ ह्रीं श्रीं

अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥१॥ एष पंच-नमस्कारः, सर्व-पापक्षयंकरः। मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलम् ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः। कमल-प्रभ-सूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ।३। एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम्। मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्य्येण, क्रोधलोभविवर्जितः। देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन् मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके। आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥६॥ साधुवृन्दं

मुखस्याग्रे, मन' शुद्ध विधाय च । सूर्य-चन्द्र-निरोधेन, सुधी सर्वार्थसिद्धये ॥७॥ दक्षिणे मदन-द्वेषी, वाम-पार्श्वे स्थितो जिन । अग-सधिषु सर्वज्ञ , परमेष्ठी शिवङ्कर ॥ ८ ॥ पूर्वाशा श्री जिनो रक्षे,-दाग्नेयीं विजितेन्द्रिय । दक्षिणाशा पर ब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥९॥ पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वर । उत्तरा तीर्थकृत् सर्वामीशानीं च निरजन' ।१०। पाताल भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तम । रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकल कुलम् ॥११॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे-दजितोऽपि विलोचने । सभव कर्ण-युगलं, नासिका चाभिनन्दन ॥१२॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभु जिह्वा सुपार्श्वदेवोऽय,

तालु चन्द्रप्रभो विभुः ॥१३॥ कण्ठं श्रीसुविधि रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसो बाहु-युगलं, वासुपूज्यः कर-द्वयम् ॥१४॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेद्, अनन्तोऽसौ स्तनावपि । सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाभि–मण्डलम् ॥१५॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षे,-दरो रोम-कटी-तटम् । मल्लिरूरू पृष्ठवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥१६॥ पादाङ्गुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम् । श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथि-वीजलतेजस्क,-वाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेदशेष-पापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥१८॥ राजद्वारे स्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे । व्याघ्रचोराग्नि–सर्पादि-भूत-प्रेत-भयाश्रिते ॥१९॥ अकाल-

मरण-प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपु-
त्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥२०॥
डाकिनी-शाकिनी-ग्रस्ते, महा-ग्रहगणार्दिते ।
नद्युत्तारेऽध्व-वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत्
॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, य. स्मरेज्जिन-
पञ्जरम् । तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते
सुखसम्पदम् ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेद, य
स्मरत्यनुवासरम् । कमलप्रभराजेन्द्र, श्रिय
स लभते नर ॥२३॥ प्रात समुत्थाय पठेत्
कृतज्ञो, य. स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम् ।
आसादयेत्स कमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवा-
ञ्छित पूरणाय ॥२४॥ श्रीरुद्रपल्लीय-वरेण्य-
गच्छे, देवप्रभाचार्य-पदाब्जहंस । वादीन्द्र-

चूडामणिरेष जैनो जीयाद् गुरुः श्रीकमल-
प्रभाख्यः ।। २५ ।।

।। इति श्रीजिनपंजर-स्तोत्रं संपूर्णम् ।।



।। अथ श्रीऋषिमण्डल स्तोत्रम् ।।

आद्यन्ताक्षर-संलक्ष्य,-मक्षरं व्याप्य यत् स्थितम् । अग्नि-ज्वाला-समं नाद-बिन्दु रेखा-समन्वितम् ।।१।। अग्नि-ज्वाला समाक्रान्त, मनोमल-विशोधकम् । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलम् ।। २ ।। अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः। सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ।।३।। ॐ नमोऽर्हभ्य ईशेभ्य ॐ सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ नमः सर्व-

सूरिभ्य उपाध्यायेभ्य ॐ नम ।।४।। ॐ नम. सर्वसाधुभ्य ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनम । ॐ नमस्तत्त्वदृष्टिभ्यश्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ।।५।। श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वे-तदर्हदाद्यष्टक शुभम् । स्थानेष्वष्ट सुविन्यस्त, पृथग्बीजसमन्वितम् ।। ६ ।। आद्य पद शिखा रक्षेत्, पर रक्षेत्तु मस्तकम् । तृतीय रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यरक्षेच्चनासिकाम् ।।७।। पचम तु मुख रक्षेत्, षष्ठरक्षेच्च घण्टिकाम्। नाभ्यन्त सप्तम रक्षेद, रक्षेत् पादान्तमष्टमम् ।। ८ ।। पूर्व-प्रणवत सान्त' सरेफो द्व्यब्धिपञ्चषान् । सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान्, श्रितो विन्दुस्वरान् पृथक् ।। ९ ।। पूज्यनामाक्षरा आद्या , पचैते ज्ञानदर्शने–चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीँ सान्तसमलकृत' ।।१०।। ॐ ह्राँ ।

ह्रीं । ह्रुँ । ह्रूँ । ह्रेँ । ह्रैँ । ह्रौँ । ह्रः । असिआउसासम्यक्ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः । जम्बू-वृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकैरष्टकाष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ।११। तन्मध्य-संगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः । उच्चै रुच्चै स्तरस्तार, स्तारामण्डलमण्डितः ॥१२॥ तस्योपरि सकारान्तं, बीजमध्यास्य सर्वगम् । नमामि बिम्बमार्हन्त्यं, ललाटस्थं निरंजनम् ॥१३॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं, बहुलं जडतोज्झितम् । निरीहं निरहङ्कारं, सारं सारतरं घनम् ॥१४॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्त्विकं राजसं मतम् । तामसं चिरसंबुद्धं, तैजसं सर्वरीसमम् ॥१५॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परम् । परापरं परातीतं,

परपरपरापरम् ॥१६॥ एकवर्णं द्विवर्णं च त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् । पञ्चवर्णं महावर्णं, सपर च परापरं ॥१७॥ सकल निष्कल तुष्टं, निर्वृतं भ्रान्तिर्वाजतम् । निरजन निराकार, निर्लेप वीतसश्रयम् ।१८। ईश्वर ब्रह्मसबुद्ध, वुद्ध, सिद्ध मत गुरुम् । ज्योतीरूप महादेव, लोकालोकप्रकाशकम् ॥ १६ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्त , सरेफो बिन्दुमण्डित । तुर्य-स्वर-समायुक्तो, वहुधा नादमालित ॥ २० ॥ अस्मिन् वीजे स्थिता· सर्वे, वृषभाद्या निजोत्तमा । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र सगता. ॥२१॥ नादश्चन्द्र-समाकारो, बिन्दुर्नीलसमप्रभ । कलारुण-समासान्त स्वर्णाभ सर्वतोमुख ॥ २२ ॥ शिर सलीन ईकारो,

विनीलो वर्णतः स्मृतः। वर्णानुसार-संलीनं, तीर्थकृन्मण्डलं स्तुमः ॥२३॥ चन्द्रप्रभ-पुष्पदन्तौ, नादस्थिति-समाश्रितौ। बिन्दुमध्यगतौ नेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभ-वासुपूज्यौ, कलापदमधिष्टितौ। शिर-ई-स्थितिसंलीनौ, पार्श्व-मल्ली-जिनेश्वरौ ॥२५॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः। माया बीजाक्षरंप्राप्ता,—श्चतुर्विशतिरर्हताम् ॥२६॥ गत-राग-द्वेष-मोहाः, सर्व-पाप-विवर्जिताः। सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥२७॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वाङ्गं, मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥ २८ ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मा मां

हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० मा मा
हिनस्तु काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० मा मा
हिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मा मा
हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदे० मा मा
हिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मा मा
हिंसन्तु पन्नगा. ॥ ३५ ॥ देवदे० मा मा
हिंसन्तु हस्तिन ॥ ३६ ॥ देवदे० मा मा
हिंसन्तु राक्षसा ॥ ३७ ॥ देवदे० मा मा
हिंसन्तु वह्नय ॥ ३८ ॥ देवदे० मा मा
हिंसन्तु सिंहका ॥ ३९ ॥ देवदे० मा मा
हिंसन्तु दुर्जना ॥ ४० ॥ देवदे० मा मा
हिंसन्तु भूमिपा. ॥ ४१ ॥ श्री गौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धय । ताभिरभ्युद्यत-ज्योतिरर्ह सर्वनिधीश्वर. ।४२। पाताल-

वासिनो देवा, देवा भूपीठवासिनः । स्ववर्वासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवा, मां संरक्षन्तु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूतवेतालाः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु, देवदेवप्रभावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्या क्लिन्ना जिता मद-द्रवा ।४६। कामांगा कामबाणा च, सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु, कान्ति कीर्त्ति धृतिं मतिम् ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः

सुदुष्प्राप्य , श्रीऋषिमण्डलस्तव । भाषित-
स्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघ ।। ४६ ।।
रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ ।
स्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवम्
।।५०।। राज्य-भ्रष्टा निज राज्य, पदभ्रष्टा
निज पदम् । लक्ष्मी-भ्रष्टा निजा लक्ष्मीं,
प्राप्नुवन्ति न सशय ।।५१।। भार्यार्थी लभते
भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतम् । वित्तार्थी लभते
वित्त, नर स्मरण-मात्रत ।। ५२ ।। स्वर्णे
रूप्ये पटे कास्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ।
तस्येवाष्टमहासिद्धिर्गृहे, वसति शाश्वती
।।५३।। भूर्जपत्रे लिखित्वेद, गलके मूर्ध्नि वा
भुजे । धारित सर्वदा दिव्य, सर्व-भीति-विना-
शकम् ।। ५४ ।। भूतै प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षै , पिशाचै-

मुद्गलैः खलैः। वात-पित्तकफोद्रेकैर्मुच्यते
नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयोपीठ-
वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः। तैः स्तुतैर्वन्दितै-
र्दृष्टैर्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ॥५६॥ एतद्गोप्यं
महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्। मिथ्या-
त्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥५७॥
आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूजयित्वा जिना-
वलीम्। अष्टसाहस्रिको जापः कार्यस्तत्सि-
द्धिहेतवे ॥५८॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति
दिने दिने। तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवन्ति
न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्,
प्रातः प्रातस्तु यः पठेत्। स्तोत्रमेतद् महा-
तेजो, जिनबिम्बं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे
सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तके ध्रुवम्। पदं

प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दित ।६१। विश्व-वन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इद स्तोत्र महास्तोत्र स्तुतीनामुत्तमं परम् । पठनात्स्मरणाज्ञापा- ल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥६३॥



॥ श्री महावीराय नमः ॥
अथ लघुजिनसहस्रनाम प्रारभः

नमस्त्रिलोकनाथाय, सर्वज्ञाय महात्मने । वक्ष्ये तस्यैव नामानि, मोक्षसौख्याभिलापया ॥ १ ॥ निर्मल शाश्वत शुद्धो, निर्विकल्पो निरामय । नि शरीरी निरातङ्क, सिद्ध-

सूक्ष्मो निरंजनः ।।२।। निष्कलंको निरालंबो, निर्मोहो निर्मलोत्तमः । निर्भयो निरहंकारो, निर्विकारोऽथ निष्क्रियः ।३। निर्दोषी नीरुजः शान्तो, निर्भेद्यो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो, निष्कर्मा निष्कलः प्रभुः ।। ४ ।। निर्वादोऽनुपमज्ञानो, नीरागो निरघो जिनः । निःशब्दः प्रतिमश्लेष्ठ, उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ।।५।। निःसंगात्प्राप्तकैवल्यो, नैष्ठिकः शब्दवर्जितः । अनिंद्यो महपूतात्मा, जगच्छिखरशेखरः ।।६।। निःशब्दो गुणसंपन्नः पापतापप्रणाशनः । सोऽपि योगाच्छुभं प्रातः, कर्मद्योतिबलावहः ।।७।। अजरश्चामरः सिद्ध, स्त्वचितश्च क्षयो विभुः । अमूर्त्तस्त्वच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ।।८।। विश्वनाथस्त्व-

गिद्यश्चा, जननोऽनुपमो भव. । अप्रमेयो जगन्नाथो, बोधरूपो जिनात्मक ॥९॥ अव्यय. सकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञानलोचन । अच्छेद्यो निर्मलो नित्य , सर्वशल्यविवर्जित ॥ १० ॥ अजेय सर्वतोभद्रो, निष्कषायो भवान्तक । विश्वनाथ. स्वयबुद्धो, वीतरागो जिनेश्वर ॥ ११ ॥ अतक. सहजानन्द, स्त्ववाड् मनसगोचर । असाध्य· शुद्धश्चैतन्याऽकर्मण्यो-फर्मवर्जित ॥ १२ ॥ अनन्तो विमलज्ञानी, निस्पृहो निष्प्रकाशक । कर्माजितो महात्मा च लोकत्रयशिरोमणि ॥१३॥ अव्याबाधो वर शभुर्विश्ववेदी पितामह । सर्वभूतहितो देव., सर्वलोकशरण्यक. ॥१४॥ आनन्दरूपश्चैतन्यो भगवास्त्रिगद्गुरु । अनतानतधी-

शक्तिः, सत्यव्यक्तोऽव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः, सप्तधातुविवर्जितः । गौरवादित्रयाद्दूरः, सर्वज्ञानादिसंयुतः ।१६। अभयः प्राप्तकैवल्यो, निर्मानो निरपेक्षकः । निष्कलः केवल ज्ञानी, मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥१७॥ अनामयो महाराध्यो, वरदो ज्ञान-पावकः । सर्वेशः सत्सुखावासो, जिनेन्द्रो मुनि-संस्तुतः ॥१८॥ अन्यूनः परमज्ञानी, विश्व-तत्त्वप्रकाशकः । प्रबुद्धो भगवन्नाथः प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः, सर्वज्ञोमदनांतकः । ईश्वरो भुवनाधीशः, सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सद्योजात-महात्मा च विमुक्तो मुक्तिवल्लभः । योगीन्द्रो-ऽनादिसंसिद्धो, निरीहो ज्ञानगोचरः ॥२१॥

सदाशिवश्चतुर्वक्त्र , सत्सौख्यस्त्रिपुरान्तक· । त्रिनेत्रस्त्रिजगत्पूज्य , कल्याणकोष्टमूर्तिक ॥२२॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्य सर्वपापविवर्जित सर्वदेवाधिको देव सर्वभूतहितकर ॥२३॥ स्वयविद्यो महात्मा च, प्रसिद्ध· पापनाशन । तनुमात्रचिदानद, श्चैतन्य श्चैत्यवैभव ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देवो, मुक्तिस्थो महतामह । मुक्तिकार्याय सतुष्टो, नीरोग परमेश्वर ॥ २५ ॥ महादेवो, महावीरो, महामोहविनाशक । महाभावो महादर्शो, महामुक्तिप्रदायक ॥२६॥ महाज्ञानी महायोगी, महातपो महात्मक । महर्द्धिको महावीर्यो, महान्तिकपदस्थित· ।२७। महापूज्यो महावंद्यो, महाविघ्नविनाशकः । महासौख्यो

महापुंसो, महामहिम अच्युतः ।।२८।। मुक्तो-
मुक्तिजसंबोध, एकोऽनेको विनिश्चलः । सर्व-
बंधविनिर्मुक्तः सर्वलोकप्रधानकः ।। २९ ।।
महाशूरो महाधीरो, महादुःखविनाशकः ।
महामुक्तिप्रदो धीरो, महाहृद्यो महागुरुः
।। ३० ।। निर्मारो मारविध्वंसो निष्कामो
विषयच्युतः । भगवांश्चमहाभ्रांतः, शांन्ति-
कल्याणकारकः ।। ३१ ।। परमात्मा परं-
ज्योतिः, परमेष्ठीपरेश्वरः । परमात्मा परा-
नन्द, परश्च परमात्मकः ।।३२।। प्रस्तुतानंत-
विज्ञानी, सौख्यनिर्वाणसंयुतः । नाकृतिरक्षरो
वर्णो, व्योमरूपो जितात्मकः ।।३३।। व्यक्तो-
ऽव्यक्तजसंबुद्धः, संसारच्छेदकारणः । निर-
वद्यो महाराध्यः, कर्मजिद्धर्मनायकः ।।३४।।

बोधिसत्वो जगद्वन्द्यो, विश्वात्मा नरकातक । स्वयमू पापहृत्पूज्य , पुनीतो विभवः स्तुत ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीतो, रूपातीतो निरजन । अनतज्ञानसपूर्णो, देवदेवेशनायक ॥३६॥ वरेण्यो भवविध्वसी, योगिनाज्ञानगोचर. जन्ममृत्युजरातीत', सर्वविघ्नहरो हर ॥ ३७ ॥ विश्वदृग्भव्यसवध , पवित्रो गुणसागर । प्रसन्न परमाराघ्यो, लोकालोकप्रकाशक ॥३८॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी, शक्रवद्य सुरार्चित । निष्प्रपचो निरातको, नि शेपक्लेशनाशक ॥३९॥ लोकेशो लोकससेव्यो, लोकालोकविलोकिन । लोकोत्तमस्त्रिलोकेशो, लोकाग्रशिखरस्थित ॥४०॥ नामाष्टकसहस्राणि ये पठन्ति पुन पुन. । ते

निर्वाणपदं यांति, प्राणिनो नात्र संशयः
॥ ४१ ॥

इति श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचितं लघुजिनसहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ श्रीमन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परम-
शङ्करः । नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्व-
कामदः ॥ १ ॥ सर्वविघ्नहरः स्वामी सर्व-
सिद्धिप्रदायकः। सर्वसत्वहितो योगी, श्रीकरः
परमार्थदः ॥२॥ देवदेवः स्वयंसिद्धश्चिदा-
नन्दमयः शिवः । परमात्मा परब्रह्म, परमः
परमेश्वरः ॥३॥ जगन्नाथ सुरज्येष्ठो, भूतेशः

पुरुषोत्तम । सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवास शुभार्णव ॥ ४ ॥ सर्वज्ञ. सर्वदेवेश: सर्वद: सर्वगोत्तम । सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरु ॥ ५ ॥ तत्त्वमूर्ति परादित्य:, परब्रह्म प्रकाशक । परमेन्दु परप्राण: परमामृतसिद्धिद: ॥ ६ ॥ अज. सनातन: शम्भु-रीश्वरश्च सदाशिव. । विश्वेश्वर: प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीश. शुभप्रद ॥७॥ साकारश्च निराकार, सकलो निष्कलोऽव्यय । निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामय: ॥ ८ ॥ अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्त शिवात्मक । अलक्ष्यश्चैव चामेयो, ध्यानलक्ष्यो निरजन ॥९॥ ॐकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरूपस्त्रयीमय । ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा,

।। अथ आत्मरक्षास्तोत्रं ।।

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं। आत्मरक्षाकरं वज्रपिंजराभं स्मराम्यहम् ।।१।। ॐ नमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरसि-स्थितं। ॐ नमोसिद्धसिद्धाणं मुखे मुखपटंबरं ।। २ ।। ॐ नमो आयरियाणं अंगरक्षाति-शायिनी। ॐ नमो उवझायाणं आयुधं हस्त-योर्द्दढं ।। ३ ।। ॐ नमो सव्वसाहुणं मोचके पादयो: शुभे। एसो पंच नमोक्कारो शिला-वज्रमयीतले ।। ४ ।। सव्वपावप्पणासणो वप्रोवज्रमयोबहि:। मंगलाणं च सव्वेंसि खादिरांगारखातिका ।।५।। स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलम्। वप्रोपरि वज्रमयं

पिधान देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावारक्षेय क्षुद्रोपद्रवनाशिनी। परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभि ॥७॥ यश्चैव कुरुते रक्षा परमेष्ठिपदं. हृदा । तस्य न स्याद्भय व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥८॥

॥ इति आत्मरक्षास्तोत्र समाप्त ॥



॥ अथ पचषष्ठियंत्रगर्भितं श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रम् ॥

आदौ नेमिजिन नौमि सभव सुविधि तथा, धर्मनाथ महादेव शान्ति शान्तिकर सदा ॥१॥ अनत सुव्रत भक्त्या नमिनाथ जिनोत्तम । अजितं जितकदर्पं चन्द्र चन्द्रसमप्रभम् ॥ २ ॥ आदिनाथ तथा देव सुपार्श्वविमल

केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः जन्मलग्ने च राशौ च यदा पीड्यन्ति खेचराः । तदा संपूजयेद्धीमान् खेचरैः सहितान् जिनांन् ।। ७ ।। पुष्पैर्गंधादिभिर्धूपैर्नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृशदानैश्च वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ।।८।। ॐआदित्यसोममंगलबुधगुरुशुक्रशनैश्चरोराहुः । केतुप्रमुखाः खेटा जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ।।९।। जिननामकृतोच्चारा देशनक्षत्रवर्णकैः । स्तुताश्च पूजिता भक्त्या ग्रहाः संतु सुखावहः ।।१०।। जिनानामग्रतः स्थित्वा ग्रहाणां तुष्टिहेतवे । नमस्कारशतं भक्त्या जपेदष्टोत्तरं शतम् ।।११।। भद्रबाहुरुवाचेदं पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वाद् ग्रहशान्तिर्विनिर्मितः ।। १२ ।। इति ।।

।। श्री गौतमाष्टकम् ।।

श्रीइन्द्रभूतिर्वसुभूतिपुत्र पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नम् । स्तुवन्ति देवा सुरमानवेन्द्रा स गौतमो यच्छतु वाञ्छित मे ।। १ ।। श्रीवर्धमानस्त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्तमात्रेण कृतानि येन । अगानि पूर्वाणि चतुर्दशापि स गौ० ।।२।। श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीत, मत्र महानंदसुखाय यस्य । ध्यायन्त्यमी सूरिवरा समग्रा, स गौ० ।।३।। यस्याभिधान मुनयोऽपि सर्वे,गृह्णन्ति भिक्षा भ्रमणस्य काले । मिष्टान्नपानाम्बर पूर्णकामा , स गौ० ।।४।। अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनाना पदवदनाय । निशम्य तीर्थातिशय सुरेभ्य स गौ०

।।५।। त्रिपञ्चसंख्याशततापसानां तप:कृशानामपुनर्भवाय । अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौ० ।।६।। सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधर्मिकं संघसपर्ययेति । कैवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां, स गौ० ।।७।। शिवंगते भर्तरि वीरनाथे, युगप्रधानत्वमिहैव मत्वा । पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रैः, स गौ० ।। ८ ।। त्रैलोक्यबीजं विज्ञानबीजं परमात्मबीजं परमेष्ठिबीजम् । यन्नाममंत्रं विदधे सुरेन्द्रैः, स गौ० ।। ९ ।। श्रीगौतमस्याष्टकमादरेण प्रबोधकाले मुनिपुंगवा ये । पठन्ति ते सूरिपदं सदैवानन्दं लभन्ते सुतरां क्रमेण ।। १० ।।

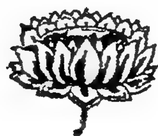
।। इति श्रीगौतमाष्टकम् ।।



।। अथ गुर्वष्टकम् ।।

नमाम्यहं श्रीजिनदत्तसूरिं गुणाकरं किन्नरपूज्यपादम् । यतीश्वरं तुष्टिकरं स्वरूपं लावण्यगात्रं बहुसौख्यकारम् ।।१।। भूपा नरा ये प्रणमंति नित्यं तेषां मनीषां सफलीकरोति। लक्ष्मीर्यशो राज्यरतिं प्रसूते विद्यावरं श्रीललनासुखानि ।।२।। भक्त्या नरा ये तव पादसेवां कुर्वन्ति सत्पुत्रं लभंत एव । न दुःखदौर्भाग्यभयं न मारिं स्मरंति ये श्रीजिनदत्तसूरिम् ।।३।। कविः स्वबुद्ध्या गुरुसंनिभोपि कस्ते गुणान् वर्णयितुं समर्थः । तथापि त्वद्भक्तिरतो मुनीन्द्र करोमि किंचिद्गुणवर्णनं ते ।। ४ ।। महार्णवे भूधरमस्तकेपि

स्मरंति ये श्रीजिनदत्तसूरिम्। सुखैः सहायांति जनाः स्वधाम्नि ततो भवंतं प्रणमामि कामम् ।। ५ ।। जैनाब्जसंबोधनपूर्णचन्द्रः सत्सेवके कामितकल्पवृक्षः । युगप्रधानं स्तुतसाधुसूरिं सूरीश्वरं श्रीजिनदत्तसूरिम् ।। ६ ।। न रोग-शोका रिपुभूतयक्षा न वा ग्रहा राक्षसदेवः रोषाः न पीडयंते तव नाममंत्रात्तस्मान्नराणां शिवदायकस्त्वम् ।। ७ ।। इदं गुरोरष्टकमुत्तमं यः प्रभातकाले पठते सदैव । किं दुर्लभं तस्य जगत्त्रयेपि सिध्यन्ति सर्वाणि समीहितानी ।। ८ ।।



॥ सरस्वती स्तोत्रम् ॥

कलमरालविहंगमवाहना, सितदुकूलविभूषणभूषिता । प्रणतभूमिरुहामृतसारिणी, प्रवरदेहविभाभरधारिणी ॥१॥ अमृतपूर्णकमंडलुधारिणी, त्रिदशदानवमानवसेविता । भगवती परमैव सरस्वती, मम पुनातु सदा नयनाबुजम् ॥२॥ जिनपतिप्रथिताखिलवाङ्मयी, गणधराननमंडपनर्त्तकी । गुरुमुखाबुजखेलनहंसिका, विजयते जगति श्रुतदेवता ॥३॥ अमृतदीधितिबिंबसमाननां, त्रिजगतीजननिर्मितमानना । नवरसामृतवीचिसरस्वती, प्रमुदितं प्रणमामि सरस्वती ॥४॥ विततकेतकपत्रविलोचने, विहितसंसृतिदुष्कृतमोचने ।

धवलपक्षविहंगमलांछिते, जय सरस्वति ! पूरितवांछिते ॥५॥ भवदनुग्रहलेशतरंगिता-स्त्वदुचितं प्रवदंति विपश्चितः। नृपसभासु यतः कमलाबलात्, कुचकलाललनानि वितन्वते ॥ ६ ॥ गतधना अपि हि त्वदनुग्रहात्, कलितकोमलवाक्यसुधोर्म्मयः। चकितबाल-कुरंगविलोचना, जनमनांसि हरंतितरां नराः ॥७॥ करसरोरुहखेलनचंचला, तव विभाति वरा जपमालिका। श्रुतपयोनिधिमध्यविकस्वरो–ज्ज्वलतरंगकलाग्रहसाग्रहा ॥ ८ ॥ द्विरद–केसरि–मारि–भुजंगमा-ऽसहनतस्कर-राज-रुजां भयं। तव गुणावलिगानतरंगिणां, न भविनां भवति श्रुतदेवते ! ॥ ९ ॥

स्रग्धरा—ॐ ह्रीँ क्लीँ ब्लूँ ततः श्रीँ तदनु

हसकल ह्रीमथो ऐं नमोऽन्ते, लक्ष साक्षाज्ज-
पेद् य. किल शुभविधिना सत्तपा ब्रह्मचारी ।
निर्यांतीं चद्रबिंबात् कलयति मनसा त्वा
जगच्चन्द्रिकाभा, सोऽत्यर्थं वह्निकु डे विहित-
घृतहुति स्याद्दशाशेन विद्वान् ॥ १० ॥

शार्दु ल—रे रे लक्षण-काव्य-नाटक-कथा-
चम्पू समालोकने, क्वायासं वितनोषि वालिश[1]
मुधा किं नम्रवक्त्राबुज । भवत्याऽऽराधय
मन्त्रराजमहसा तेनाऽनिश भारतीं, येन त्व
कवितावितानसविताऽद्वैत' प्रबुद्धायसे ॥११॥
चचन्द्र द्रमुखी प्रसिद्धमहिमा स्वच्छदराज्य-
प्रदाऽनायासेन सुरासुरेश्वरगणैरभ्यर्चिता
भावत । देवी सस्तुतवैभवा मलयजा लेपाग-
रागद्युति , सा मा पातु सरस्वती भगवती

त्रैलोक्यसंजीवनी ॥ १२ ॥

द्रुतविलंवित—स्तवनमेतदनेकगुणान्वितं,
पठति यो भविकः प्रमुदा प्रगे ।
स सहसा मधुरैर्वचनामृतै-
र्नृपगणानपि रंजयति स्फुटं ।१३।

॥ इति सरस्वती स्तोत्रम् ॥



॥ जिनदत्तसूरिअष्टकम् ॥

सुरकिन्नरवंदितपद्कमलं सकलं समलंकृतभूमितलम् । गतपापमलं चरितैर्विमलं जिनदत्तगुरुं प्रणताविरलम् ॥१॥ भुवनत्रयसारियशःपटलं खलमंडलखंडनतः प्रबलम् । विषमायुधवर्गदलं सरलं जिनदत्तगुरुं प्रणमामि

कलम् ।।२।। विषमस्थलपातिजनोद्धरण शरण महसा भविना शरणम् । हरण तमसाकमलाकरण प्रणमामि गुरु शरण प्रबलम् ।। ३ ।। वरपालितदुष्करसच्चरण जनताचितकीर्तितसच्चरणम् । जितदुर्जयचचलभृतकरण सुगुरु प्रणमामि लसत्करणम् ।। ४ ।। नरपैर्महित मुनिपैर्विनुत प्रमदैरहित क्षमया सहितम् । न परैश्चलित न भयैस्खलितं प्रणमामि गुरु भुवने विदितम् ।। ५ ।। परमागमस्वच्छमति प्रथित रमया ललित सुजनैर्मिलितम् । सरसै कथित रुचिभिर्ललित प्रणमामि गुरु कविभिर्ध्वनितम् ।। ६ ।। भवतापहर शिवशर्मकर धनधान्यभरं कृतमुत्प्रचुरम् । करुणानिलय मुनिप्राग्रहर जिनदत्तगुरुं प्रणमामिवरम् ।७।

वरवाछगमंत्रिसुतं सुपदं कृतवाहडदेणमनः प्रमुदम् । विगतव्यसनं हितदं समुदा मुनिराजमहं प्रणमामि सदा ॥८॥ श्रीमच्छ्रीजिनदत्तसूरिसुगुरोः कल्याणवल्लीतरोर्लब्धेरेकनिधेः सुबुद्धिजलधेर्भाषांनिधेश्चिन्निधेः । प्रत्यूषे विधिना समर्थमुनिना हृब्धं गुरोरष्टकं ये ध्यायन्ति नरा भवन्ति सततं वागीश्वराः श्रीधराः ॥ ६ ॥



॥ जिनदत्तसूरिअष्टकम् ॥

श्रीवीरतीर्थेश्वरशासनस्य प्रभावकः कोटिकगच्छनेता । चान्द्रे कुलेऽभूद्वरवज्रशाखः प्रभाकरः श्रीजिनदत्तसूरिः ॥१॥ सदन्बिका-

दत्तयुगप्रधान पदप्रधानोतिशयद्वयुपेत ।
विद्याचरण. सूरिगुणान्वितो यः सूरीश्वरः
सर्वनतो व्यराजत् ।। २ ।। धु धुकाभिधसत्पुरे
समजनि श्रीवाछिगोत्रीसख. । श्रीमद्वाहड-
देव्युदारचरिता तस्याभवद्गेहिनी । तत्कुक्षा-
ववतीर्य हुम्वडकुलोत्तस शिशुत्वेपि यः श्रीमद्-
पाठकधर्मदेवसविधे जग्राह सत् सयमम् ।।३।।
श्रीयुक्ताभयदेवसूरिसुगुरोः शिष्यैर्वराचार्यकैः
श्रीमद्भि किल देवभद्रगुरुभि श्रीचित्रकूटे
स्वय । सूरे श्रीजिनवल्लभस्य सुगुरो पट्टे
निवेश्याऽग्रिमे य श्रीमद् जिनदत्तनामविधिना
श्रीसोमचन्द्राह्वय ।।४।। तत स्वकीयोत्तम-
मूलविद्या त्रिकोटिसख्यस्मरणाद्विशुद्धा । सुरा-
सुराभूरितरायदीयौ पादौ नमन्ति स्म सुहर्ष-

वन्तः ।५। सुसाधुसाध्वीसमुदाययुक्ताः सुश्रावकाणां बहवश्च वर्गाः प्रबोधिता येन कृपापरेणसद्धर्ममार्गप्रथनेन लोके ।। ६ ।। क्रमेण कृत्वानशनं विशुद्धंपुरोत्तमे श्रीअजयादिमेरौ । आयुःक्षये स्वर्गमवाप सम्यक् यः श्रीगुरुर्ज्ञानिसमाहितात्मा ।।७।। इत्थं स्तुतः श्रीजिनदत्तसूरिः क्षमादिकल्याणसुपाठकेन । सूरीश्वरः सर्वगुणाकरोऽसौ भव्यात्मनां वांछितपूर्वको ऽस्तु ।। ८ ।।

।। इति जिनदत्तसूरिअष्टकम् ।।



।। अथ कुशलगुरुदेव-स्तुति ।।

सुखं सर्वा संपद् वसति पदयोर्यस्य वदने
विनिद्रावागीशा हृदयकमले संविदधिकम् ।

विराग. सर्वाङ्गेष्वपि च भगवद्भक्तिरनिशम् समृद्धचर्थं वदे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥१॥ निशि स्वापाधीन निशिदिनमधीनौ समयीना पर वाणीलक्ष्म्योर्निलयमपि तद्दाननिपुणौ । सदा यौ वर्तेते जयत इव पाथोजयुगल, समृद्धचर्थं० ॥२॥ क्षिपतौ तौ प्रेक्षा सरसिरुहयोर्यो मृदुलयोर्जपापुष्पाभासो किशलयजिताशेषमहसो । लसल्लेखालक्ष्मप्रकटितपरा श्रीसदनयो समृद्धचर्थं वदे० ॥३॥ सुरेभ्य स्वस्थेभ्य' कतिपयदिनैर्य फलमथो कदाचिद्दत्तेद्राक्श्रियमपि दरिद्रायपरमाम् । सुरद्रु त्यक्त्वोपासत इति बुधौ यौ भुवि गतौ, समृद्धचर्थं वदे० ॥ ४ ॥ सुरैरास्वाद्यते परमगुरुधर्मोपदिशत , सदा काम पीतामृतरसवराशै-

रपि गिर: । श्रुता यस्य श्रेय: श्रियमपि दिशंति स्थिरधियां, समृद्धयर्थ वंदे० ॥५॥ निधिस्सर्वश्रीणामनधिकरणौ सर्वविपदाम्, मृदुस्निग्धौ शोणावुपचितनखौ गूढघुटिकौ । समानौ प्रोत्तुंगप्रपदपदशाखाविलसतौ, समृद्धयर्थं वंदे० ॥६॥ ययोरर्चा सूते धनसुखधराधामरमणी: । शरीरारोग्यत्वं विनयनयविद्यानिपुणताम् । गुणानौदार्यादीनपि तनयलक्ष्मी: श्रितनृणां, समृद्धयर्थ वंदे० ॥७॥ भयंकारागारामयसमरपारीन्द्रफणभृ–न्महापारावारो द्विरदवनवैश्वानरभवम् । न डाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजं यत्स्मरणत: समृद्धयर्थ वंदे ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनपद्मसूरिरचितं दिव्याष्टकं सद्गुरो:। पुण्यं मंत्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वं-

सनम् । भक्त्या य पठति प्रभातसमये सर्वत्र तस्य ध्रुव, वश्या भूपतयो भवति सतत लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी ।। ९ ।।

।। इति समाप्तम् ।।



।। कुशलसूरि-गुरोरष्टकम् ।।

पद्मा कल्याणविद्या कमलपरिमलस्फूर्ति-भानुप्रकाश । प्रीतिस्फीत्याभिनुत्यक्रमकमल-मिलन् मानवा मर्त्यनागे ।। प्रौढाचार्यविली-भि सदतिशयकृते ध्येयज्ञेय स्वभाव। स्त्राता-देरावरे श्रीजिनकुशलगुरोस्तूपरूपप्रसाद ।१। सघे ग्रामे पुरे वा सकलजनपदे राजवर्गे कुटु-म्बे । गच्छे सघाटके वा प्रमुदितमनसा वासरे

वा निशायाम् ।। यन्नाम स्मर्यमाणं भवति भयहरं सर्वसंपत्तिकारी। श्रीमान्शान्तप्रतापी जिनकुशलगुरुर्नत्वदन्योऽस्ति लोके ।। २ ।। सर्वक्ष्मापालमालापरिषद् विबुधश्रेणिवेणीसभायां। वादव्याख्यानगोष्ठीसुललितवचनाव्यासत्रिव्यासजन्यम्।। सौभाग्यं त्वत्प्रसादाद्विमलशशिकलाकान्तिकीर्तिर्यदस्मात्। त्रैलोक्यख्यातिसूरिर्जिनकुशलगुरो वांछितं मे प्रदेहि ।। ३ ।। सामर्थ्यं सर्वशास्त्रे स्ववचनपटुतां तार्किकत्वं कवित्वम्। निष्णातः शब्दशास्त्रे समयनिपुणतां चारुनैमित्तिकत्वम् ।। ईहध्वे जागरूकं यदि महिमकरीं निर्मलां सर्वविद्याम्। सेवध्वं तत्त्रिशुध्या जिनकुशलगुरुं कामिते कल्पवृक्षम् ।।४।। अंगे वंगे कलिंगे मगधजन-

पदे गुर्ज्जरे मालवे वा । सौराष्ट्रे मेद पाटे मरुषु किमपर भूर्भुव स्वस्त्रयेपि ।। ग्रीष्मे निर्नीरदेशे ललितवितरणाभीष्टदानप्रसूतान् । कीर्तिस्ते विस्तरती जिनकुशलगुरो । पावयत्येव विश्वम् ।। ५ ।। सिद्धि स्वपाणिपद्मे विलसति हि यया स्वान्यसौख्योदयः स्याद्भाले सौभाग्यलक्ष्मीरधिवसति ययोत्सर्पति श्रीरभीष्टा ।। बुद्धि सा कापि चित्ते स्फुटति किल यया क्ष्ण्यते सर्वदा त्व । त्वद्भक्ताना नराणा जिनकुशलगुरो दुर्लभ नैव किंचित् ।। ६ ।। वार्द्धौ वायुप्रवेगप्रजनितवहनोत्पातसपातमध्ये ज्वालाजिह्वे कराले ज्वलति चयरतस्तस्करोपद्रवे वा ।। क्ष्मापाले क्रोधरुद्धे हरिकरिभुजगाभोगरोगादियोगे । ध्यायति त्वत्प्रभाव

जिनकुशल गुरो नैव कष्टं लभन्ते ।।७।। सूरीन्द्रश्रीसुधर्म्मप्रभुपदविततााचार्यवर्यानुधुर्या । मासाद्योद्यत्प्रभावो विशदखरतरश्लाघ्यगच्छेश्वरत्वं । सम्यग्ज्ञानक्रियाभ्यां जिनमतमतुलं प्रौढमारूप्य रूपाम् । प्राप्तस्वर्गश्रियं श्रीजिनकुशलगुरुर्वाञ्छितं वः पिपर्तु : ।।८।। श्रीजिनकुशलगुरूणामष्टकमिष्टसिद्धबुधिकरं। यःपठति गुणात्सततं सः स्याद्भोक्ता च वक्ता च ।।९।।

।। इति ।।



।। सरस्वती-प्रथम-स्तोत्रम् ।

नमस्ते शारदादेवि काश्मीरप्रतिवासिनि ।
त्वामहं प्रार्थये मातर्विद्यादानं प्रदेहि मे ।।१।।

सरस्वती मया दृष्टा देवी कमललोचना ।
हंसस्कंधसमारूढा वीणापुस्तकधारिणी ।२।
सरस्वतीप्रसादेन काव्यं कुर्वन्ति पण्डिताः ।
तस्मान्निश्चलभावेन पूजनीया सरस्वती ।३।
प्रथमा भारतीनाम्नी द्वितीया च सरस्वती ।
तृतीया शारदादेवी चतुर्थीहंसवाहिनी ।।४।।
पंचमी जगद्विख्याता षष्ठी वागीश्वरी तथा ।
कुमारी सप्तमी प्रोक्ता अष्टमी ब्रह्मचारिणी
।५। नवमी त्रिपुरादेवी दशमी ब्राह्मणीसुता ।
एकादशी तु ब्रह्माणी ।। ६ ।। द्वादशी ब्रह्म-
वादिनी वाणी त्रयोदशी नाम भाषा चैव
चतुर्दशी । पंचदशी श्रुतादेवी षोडशी श्रीर्नि-
गद्यते ।। ७ ।। एतानि षोडशनामानि प्रात-
रुत्थाय- य पठेत् । तस्य संतुष्यते देवी शारदा

वरदायिनी ॥८॥ या कुंदेन्दुतुषारहारधवला या चन्द्रबिंबानना । या त्रैलोक्यविभूषणा भगवती या राजहंसप्रिया । या पद्मोदलनेत्र-पद्मयुगला या जातिपुष्पप्रिया । सा नक्षत्र-ललाटपट्टतिलका सा शारदा पातु माम् ॥९॥
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या श्वेतपद्मासना, या वीणावरदंडमंडितकरा या शुभ्रवस्त्रा-वृता । या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता, सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥१०॥



॥ सरस्वतीस्तोत्रम् ॥

त्वं शारदा देवि समस्त शारदा विचित्ररूपा बहुवर्णसंयुता। स्फुरन्ति लोकेषु तवैव सूक्तय सुधास्वरूपा वचसा महोर्म्मय. ॥१॥ भवद्विलोलम्बकदर्शनादहो मन्दोपि शीघ्रं कविरेव जायते। तवैव महात्म्यमखण्डमीक्ष्यते तवार्थवादः पुनरेव गीयते ॥२॥ कर्पूरनीहारकरोज्वलो तनुर्विभाति ते भारति शुक्लनीरजे। कराग्रभागे धृतचारुपुस्तका डिण्डीरहीरामलशुभ्रचीवरा ॥ ३ ॥ मरालबालामलवामवाहना स्वहस्तविन्यस्त विशालकच्छपी। ललाटपट्टे कृतहेमशेखरा सन्ना प्रसन्ना भवतात्सरस्वती ॥४॥ सद्विद्याजलराशिता-

रणतरी सद्रूपविद्याधरी । जाड्यध्वान्तहरी सुधाब्धिलहरी श्रेयस्करी सुन्दरी ।। सत्या त्वं भुवनेश्वरी शिवपुरी सूर्यप्रभाजित्वरी ।। स्वेच्छादानवितानिर्जरगवी सन्तापतांछित्वरी ।५। सुरनरसुसेव्या सेवकेनापि सेव्या । भवति यदि भवत्या किं कृपा कामगव्या ।। जगति सकल सूर्यस्त्वत्समान नभव्या । रुचिरसकलविद्या दायिका त्वं तुनव्या ।।६।। यो भक्त्या सुरितो नवीति सततं जघ्नन्ति सौख्यं महत्त्वत्सेवा च चरीकरीति तरसा बोभोति संश्रेयसाम् ।। त्वं मातर्हरिधत्ति चेतसि निजे दर्द्रष्टिरोचिर्म्मयम् । तस्याग्रे नरिनर्ति योजितकरो भूपो नटीवत्स्वयम् ।७। आख्यातुं तव देवि ! कोपि न विभुर्माहात्म्य-

मामूलतो, नो ब्रह्मा न च शंकरो नहि हरिर्नो जावर्पति स्वर्प्यंति । त्वच्छक्तिर्वरिर्वाति विश्वजननी लोकत्रयव्यापिनी । सा त्वं काचिदगम्यरम्यहृदया वाग्वादिनी पाहिमाम् ॥८॥ स्तोत्र पठेद्य. श्रुतदेवताया । भक्त्यायुतः शुद्धमना प्रभाते ॥ विद्याविलास विपुल प्रकाश, प्राप्नोति पूर्ण कमलानिवासम् ॥९॥

॥ इति वाग्देव्या स्तोत्रम ॥



सकललोकसुसेवितपत्कजा वरयशोजितशारदकौमुदी । निखिलकल्मषनाशनतत्परा जयतु सा जगता जननी सदा ॥१॥ कमलगर्भविराजितभूघना मणिकिरीटसुशोभितमस्तका । कनककुण्डलभूषितकर्णिका । जय०

।। २ ।। वसुहरिद्गजसंस्नपितेश्वरी विधृत-सोमकला जगदीश्वरी । जलजपत्र समान-विलोचना । जय० ।।३।। निजसुधैर्यजिता-मरभूधरा निहितपुष्करवृंदलसत्करा । समु-दितार्कसुहृत्तनुवल्लिका । जय० ।४। विविध-वांछितकामदुघाद्भुता, विशदपद्महृदान्तर-वासिनी । सुमतिसागरवर्धनचन्द्रिका । जय० ।।५।। इति श्वेतपद्मासनादेवी श्वेतपुष्पाभि-शोभिता । श्वेताम्बरधरा नित्यं श्वेतगंधानु-लेपना ।।१।। श्वेताक्षी शुक्लवस्त्रा च श्वेत-चंदनचर्चिता । वरदा सिद्धगंधर्वशशिभि स्तूयसे सदा ।। २ ।। स्तोत्रेण च तथा देवी गीर्धात्री च सरस्वती ये पठन्ति त्रिकालं च सर्वविद्यां लभन्ति ते ।। ३ ।। इति ।।

।। श्री शारदाऽष्टकम् ।।

चन्द्रानने ! नमस्तुभ्य वाग्वादिनि ! सरस्वति ! मूढत्व हर मे मात ! शारदे ! वरदा भव ।१। दिव्याम्बरसुशोभाढ्ये ! हससत्पक्षवाहिनी । ज्ञान मनोज्ञ मे देहि सौख्य यच्छ सुरेश्वरि ! ।।२।। कर्णावतससंयुक्ते ! हस्तप्रस्तुतपुस्तके ! तुम्बीफलकराऽऽयुक्ते सद्वीणावाद्यवादिके ।।३।। विकचीकुरु मेधा मे जाड्यध्वान्तमपाकुरु। विशालाक्षीं पद्ममुखीं भारतीं प्रणमाम्यहम् ।।४।। वाचस्पतिस्तुते देवि ! गाढाज्ञानप्रणाशिनि ! मा नित्यं कल्मषात् पाहि विद्यासिद्धये च मे भव ।।५।। ब्रह्माणी विश्वविख्यातां प्रसन्ना ब्रह्मचारिणी । वाक्-

शुद्धि कुरु मे मात: ! यया कीर्ति लभेत्तराम् ।।६।। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं नमोऽन्ते महामन्त्र-स्वरूपिणी । एकाग्रचेतसा ध्यात्रै त्रिपुरा परितुष्यति ।।७।। द्विसहस्रशराब्देऽदोऽलेखि ब्राह्म्यष्टकं मया । पठेन्नित्यं त्रिसन्ध्यं यो भोक्ता वक्ता भवेच्चस: ।८। इत्थं मनो-वचन-काय-विशुद्ध भावा:, पुण्यश्रियं श्रुत-सुवर्ण-मयां स्तुवन्ति-ज्ञान–प्रधान-पद–साधन-साव-धानां-कल्याण-कोटि-कलितां कमलां लभन्ते ।। ९ ।।



॥ श्रीगुरु स्तोत्रम् ॥

यथा प्राणा नराधारास्तथैव सुखसागर ॥ नित्य नमामि नाथ त्वा त्वमेव शरणं मम ॥१॥ चखान दुष्टकर्माणि दिव्यज्ञानदिवाकर. । चारित्ररत्नभण्डारदर्शन विमल कृतम् ॥ २ ॥ दानशीलतपोभाव श्रष्टमातृपरायण श्रावालब्रह्मचारी च भाविता भावना सदा ॥३॥ कपायमदनिद्रादि पञ्चेन्द्रियाण्यशेपत । जितानि हास्यजिन्न न वैरिणी विकयाजिता ॥४॥ निर्जितोकाममोहो च रागद्वेपविवर्जित । धौत सकलमिथ्यात्व सम्यक्त्वरागरजित ॥५। नयनिक्षेपमवेत्ता गुणस्थान विशेपत । विजानासि

गुणग्राहिन् ! स्याद्वादञ्च महारसम् ॥ ६ ॥ पवित्रनामजापेन ज्ञानादिसकलं फलं लभन्ते सर्वधीमन्तो नैवात्र कोपि संशयः ।७। त्वमेव प्राणकाधारस्त्वमेव हितकारकः । त्वमेव सुखसौन्दर्यस्त्वमेव भवतारकः ॥८॥ त्रैलोक्यसिंधोर्भवतापहर्तु र्गु रोः प्रसादप्रभुतांकितांतः। तस्यैव सानन्दसुखाम्बुराशेः पादौ सदानन्दरसेन नौमि ॥ ६ ॥



उवसग्गहरं महाप्रभाविक बृहद् स्तोत्रम्

उवसग्गहरं पासं,-पासंवंदामि कम्मघरण-मुक्कं । विसहर विस जिन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंलग मंतं, कंठे धारेइ जो

सया मणुश्रो । तस्स गहरोगमारी, दुठ्ठ जरा जति उवसाम ॥२॥ चिठ्ठउ दूरे मतो तुज्झ, पणामोवि बहुफलो होई । नरतिरिये सुवि जीवा, पावति न दुक्ख दोहग्ग ॥३॥ ॐ अमरतरु कामधेणु, चिंतामणि कामकुम्भ माइया । सिरिपास नाह सेवा. गहाण सव्वेवि दासत्तम् ॥४॥ ॐ ह्री श्रीँ ऐँ तुह दसणेण सामिय, पणासेइ रोग सोग दुक्ख दोहग्ग । कप्पतरुमिव जायइ, ॐ तुह दंसणेण सव्व-फलहेउ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्री नमिउण विग्घ-नासय, मायाबीएण धरण नागिंद । सिरि कामराज कलिय, पासजिणद नमसामि ॥६॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सिरि पास विसहर, विज्जामतेण झाण झाएज्जा । धरण पउमाइ देवी, ॐ

जवेइ सुद्धमणेणं। पावइ इच्छियं सुहं, ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्वाहा ॥१९॥ ॐ रोग जल जलण विसहर, चौरारि मईद गय रण भयाइं। पास जिण नाम संकित्तणेण, पसमंति सव्वाई ह्रीँ स्वाहा ॥२०॥ ॐ जयउ धरणिंद नमंसिय, पउमावइ पमुह निसेविय पाया। ॐ क्लीं ह्रीं महासिद्धि करेइ पास जगनाहो ॥२१॥ ॐ ह्रीं श्रीं तं नमः पासनाहं, ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र नमंसियं दुहविणासं। ॐ ह्रीं श्रीं जस्स पभावेण सया, ॐ ह्रीं श्रीं नासंति उवद्दवा बहवे ॥२२॥ ॐ ह्रीं श्रीं पइ समरंताण मणे, ॐ ह्रीं श्रीं न होइ वाहि न तं महा दुक्खं। ॐ ह्रीं श्रीं नामंपि हि मंतसमं, ॐ ह्रीं श्रीं पयडं नत्थीत्थ

सदेहो ॥२३॥ ॐ ह्लीं श्रीं जल जलण भय, तह सप्पसिह, ॐ ह्लीं श्रीं चोरारि सभवे खिप्प । ॐ ह्लीं श्रीं जो समरेइ पास पहुँ, ॐ ह्लीं क्लीं पुहविक्याविं किं तस्स ॥२४॥ ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं ह्लीं इह लोगट्ठी परलोगट्ठी, ॐ ह्लीं श्रीं जो समरेइ पासनाह, ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लः गां गीं गुं गें, त तह सिज्झइ खिप्प ।२५। इह नाह स्मरह भगवंत, ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं ग्रां ग्रीं ग्रुं ग्रें क्लीं ब्लीं, श्री कलि कुंड स्वामिने नम ।२६। इह सथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण । ता देव दिज्ज बोहिं, भवे-भवे पास जिणचद ॥२७॥

॥ ॐ शाति ॥ ॐ शांति ॥ ॐ शांति ॥



।।४।। दीव्यस्तुवर्णांश्रियमेव लोक-प्रबोध-हेतुं स्वपदाश्रितां या । प्रकुर्वतीं तां सुधियां समन्तात् पुण्यश्रियं नौमि गुरुं गुरूणाम् ।५। इत्थं-प्रवर्तक-पदं दधतीं सुपूज्यां पुण्य श्रियं गुरु-गुरुं ये स्तुवन्ति भक्त्या । पुण्यश्रियं वर-विलासयुता जनास्ते कल्याणकोटि-कलितां कमलां लभन्ते ।।६।।



[३]

हिन्दी विभाग

॥ श्रीगौडीपार्श्वनाथवृद्धस्तवनम् ॥

दोहा । वाणी ब्रह्मावादिनी, जाणेजग-विख्यात । पासतणा गुणगावता मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारगें अणहलपुरें, अहमदावादे पास । गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥२॥ सुभ वेला सुभ दिन घडी मुहुरत एक मंडाण । प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥३॥ (ढाल) गुणहि विशाला मंगलीक माला, वामानो सुत साचोजी । धण कण कचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचोजी (गु०) ॥४॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरक तणे घर हुतीजी । अश्वनी भूमि अश्वनी

पीडा, अश्वनी वाल विगूती जी (गु०)।।५।। जागंतो जक्ष जेहनै कहियै, सुहणो तुरकनैं आपे जी। पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापे जी (गु०)।।६।। ग्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठी ने देजे जी ! अधिको म लेजे ओछो म लेजे, टका पांचसै लेजे जी (गु०) ।।७।। नहिं आपिस तो मारीस मुरडोस, मोर बंध बंधास्ये जी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लछि घणी घर जास्यै जी (गु०) ।।८।। मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै, सारथ वाह जे गोठी जी। निलवट टीलो चोखा चेड्यो, वस्तु वहै तसु पोठी जी (गु०) ।।९।। (दूहा)।। मनसु वीहतो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण ! बीबी नें सुहणा तणो, संभ-

लावै सहिनाण ॥१०॥ वीबी वोले तुरकने बडा देव है कोय । अवसताव परगट करो नहीतर मारै सोय ॥ ११ ॥ पाछली रात परोडीये, पहली बाधै पाज । सुहणा माहे सेठने, सभलावै जक्ष-राज ॥१२॥ (ढाल) एम कही जक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणे जी । पास तणी प्रतिमा तु लेजे, लेतो सिर मत धुणे जी (एम०) ॥१३॥ पाचसै टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारु जी । जतन करी पहुचाडे थानिक प्रतिमा गुण सभारैजी (एम०) ॥१४॥ तुझने होसी बहु फलदायक, भाई गोठी सुणजे जी । पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह उठीने थुणजे जी (एम०) ॥१५॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो

आपणे थानक पहुंतो जी । पाटण मांहें सारथवाहु, हींडे तुरकने जोतो जी (एम०) ।१६। तुरकै जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी । संकेत पहुतो साचो जाणि, बौलावै बहु लाडै जी (ए०) ।।१७।। मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपुं, पास जिणेसर केरी जी । पांचसै टक्का जो मुझ आपै, मोल न मांगु फेरी जी (ए०) ।। १८ ।। नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो रंगै जी । केसर चन्दन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगै जी (ए०) ।।१९।। गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखै जी । अनुक्रम आव्या परिकर माहें, श्री संघ ने सुर साखै जी (ए०) ।२०।। उच्छ्रव दिन २ अधिका थाये, सत्तर

भेद सनात्रो जी ।। ठाम २ ना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी (ए०) ।। २१ ।। (दूहा) ।। इक दिन देखै अवधिसु, परिकर पुरनो भङ्ग । जतन करुं प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभङ्ग ।२२। सुहणो आपै सेठने, थल अटवी उज्जाड़ । महिमा थास्यै अति घणि, प्रतिमा तिहा पहुंचाड ।।२३।। कुशल खेम तिहा अछे, तुझने मुझने जाणि । सका छोडी काम करि, करतो मकर सकाणि ।।२४।। (ढाल) ।। पास मनोरथ पूरा करै, वाहण एक वृषभ जोतरै । परिकरथी परियाणो करै, एक थल चढि बीजो उतरै ।२५। बारै कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चालै तेतले । गोठी मन विमासण थई, पास भुवन

मंडावु सही ॥२६॥ आ अटवी किम करूँ प्रयाण । कटको कोई न दीसै पहाण । देवल पास जिनेसर तणो, मंडाबु किम गरथें विणो ॥२७॥ जल विन श्रीसंघ रहस्यै किहां सिला-बटो किम आवे इहां । चिन्तातुर थयो निद्रा लहै, यक्षराज आवीने कहै ॥२८॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां,गरथ घणो जाणीजे तिहां। स्वस्तिक सोपारी ने ठाणि, पाहण तणी उल्लटस्यै खाणि ॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जलनीरसो कूओ । खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छै नीलो छाण ॥३०॥ सिलावटो सीरोही वसै कोड पराभवियो किसमिसे । तिहां थकी तुं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥३१॥

गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो । रोग गमीने पूरूँ आस, पास तणो मडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन माहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेडवा ॥३३॥ सिलावटो आवे सूरमो, जिमे खीर खांड घृत चूरमो । घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥३४॥ थभ २ कीधी पुतली, नाटक कौतुक करती रली । रङ्गमंडप रलियामणो रसे, जोता मानवनो मन वसे ॥३५॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मेडे आवास । दिवस विचारो इंडो घड्यो ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥३६॥ शुभ लगन शुभ वेला, वास, पब्बासण वेठा, श्रीपास । महिमा मोटी

सियाल ॥४८॥ चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उड़कार। विषधरनो विष ऊतरे संग्राममें जय जयकार ॥४९॥ रोग सोग दारिद्र दुख, दोहग दूर पुलाय । परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कडखानी चाल) उंजितु २ उंजि उपसम धरी, ॐ ह्रीं श्रीँ श्री पार्श्व अक्षर जपंते । भूत ने प्रेत झोटिंग व्यन्तर सुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते (उं०) ॥५१॥ दुष्टरा रोग सोग जरा जंतने ताव एकान्तरा दुत्तपंते। गर्भबन्धन व्रणं सर्प विछु विषं, चालिका बालमेवा झखंतै (उं०) ॥५२॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते । दाढ़ ंदरतणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल

विकराल दते ।।५३।। (उ०) धरणेन्द्र पद्मा-
वती समर सोमावती, वाट आघाट अटवी
अटतें । लछमी लोढु मिलें सुजस वेला वलें,
सयल आस्या फलें मनहसतें (उ) ।।५४।।
अष्ट महाभय हरें कानपीडा टलें ऊतरें सूल
सीसग भणते । वदत वर प्रीतसु प्रीतिविमल
प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्ते
(उजितु) ।।५५।।

इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्धस्तवन समाप्तम् ।।



।। श्री गौतम स्वामीजी का रास ।।

वीर जिणेसर चरण कमल कमला, कय
वासो, पणमवि पभणिसु सामीसाल, गोयम

गुरु रासो । मरण तणु वयरण एकंत करवि, निसुरणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुरण गरण गहगहिया ॥१॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त, खोरणी तल मंडरण, मगह देस सेरिणय नरेश, रिऊ दल बल खंडरण । धरण-वर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुरण गरण सज्जा; विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ तारण पुत्त सिरि इन्दभूइ, भूवलय पसिद्धो, चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो । विनय विवेक विचार सार, गुरण गहरण मनोहर; सात हाथ सुप्रमारण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयरण वयरण कर चरण जरणवि, पंकज जल पाडिय; तेजहिं तारा चन्द सूरि, आकाश भमाडिय । रूवहि

मयरण अनग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरमे मेरु गभीर सिधु, चगम चय चाडिय ॥४॥ पेक्खवि निरुवम रुव जास, जरण जपे किंचिय, एकाकी किल भित्त इत्थ, गुरण मेल्या सचिय । अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिरणवर इरण अचिय, रभा पउमा गउरी गग, रतिहा विधि वचिय ॥५॥ नय बुध नय गुरु कविरण कोय, जसु आगल रहियो, पच सयां गुरण पात्र छात्र, हींडे परवरियो । करय निरतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय, अरणचल होसे चरम नारण, दसरणह विसोहिय ॥६॥वस्तु॥ जबूदीव जबूदीव भरह वासमि, खोणीतल मडरण, मगह देस सेरिगय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहा, विप्प वसे वसुभूइ

सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुरण गरण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजान ।।७।। भास ।। चरम जिरणेसर केवल-नारणी, चौविह संघ पइट्ठा जारणी । पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ।।८।। देवहि समवसररण तिहां कीजे, जिरण दीठे मिथ्यामति छीजे। त्रिभुवन गुरु सिंहासन बेठा, ततखिरण मोह दिगंत पइट्ठा ।।६।। क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिस दिन चोरा । देव दुंदुभि आगासें बाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ।। १० ।। कुसुम वृष्टि विरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मांगे सेवा । चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ।। ११ ।। उपसम रसभर वर

वरसता, जोजन वाणि वखाण करता। जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥१२॥ कतसमोहिय जलहलकता, गयणविमाणहि रणरणकता। पेक्खवि इन्दभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवते ॥१३॥ तीर तरडक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गहगहिता। तो अभिमाने गोयम जपे, इण अवसर कोपे तणु कपे ॥१४॥ मूढा लोक अजाण्यु बोले, सुर जाणता इम काइ डोले। मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण सम्पन्न, पावापुर सुरमहिय, पत्त नाह ससार तारण, तिहि देवइ निम्महिय, समवसरण वहु सुक्ख

कारण, जिणवर जग उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार सिंहासण सामी ठव्यो, हुम्रो तो जय जयकार ॥१६॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्द्रभूइ भूयदेव तो हुंकारो करी संच्चरिय, कवणसु जिणवर देव तो। जोजन भूमि समवसरण पेक्खवि प्रथमारंभ तो, दह दिस देखे विबुधवधू, आवंति सुररंभ तो ॥१७॥ मणिमय तोरण दंड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो, वइर विवर्जित जंतुगण, प्राति-हारिज आठ तो। सुर नर किन्नर असुरवर, इंद्र इंद्राणी राय तो, चित्त चमक्किय चित-वै ए, सेवंता प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस-किरण सामी वीरजिण, पेखिय रूप विसाल तो; एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्रजाल

तो। तो बोलावइ त्रिजगत गुरु, इद्रभूइ नामेण तो, श्री मुख ससय सामो सवे, फेडे वेद पएण तो ।१९। मान मेलि मद ठेलि करी, भगतिहि नाम्यो सीस तो, पच सयासु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सोस तो। बधव संजम सुणिवि करी अगनिभूइ आवेय तो, नाम लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥२०॥ इण अनुक्रम गणहर रयण थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेशे भुवन गुरु, सयमशु व्रत बारतो। विहु उपवासे पारणो ए, आपणपे विहरत तो, गोयम सयम जग सयल, जय जयकार करत तो ॥२१॥ वस्तु ॥ इद्रभूइ इद्रभूइ चढियो बहुमान, हुकारो करि कपतो, समवसरण पहुतो तुरत तो, जे जे ससा सामि सवे, चरम-

नाह फेडे फुरंत तो वोधिबीज संजाय मने, गोयम भवहि विरत्त, दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय संपत्त ॥२२॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो, दीठा गोयम सामि, जो निय नयणे अमिय झरो । समवसरण मझार, जे जे संससा ऊपजे ए, ते ते पर उपगार कारण पूछे मुनि पवरो ।२३। जिहां २ दीजें दीख, तिहां तीहां केवल ऊपजे ए; आप कने अणहुंत, गोयम दीजें दान इम । गुरु ऊपर गुरु भक्ति सामी गोयम ऊपनिय; इणिछल केवलनाण, रागज राखे रंग भरे ॥२४॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढी चउवीस जिण, आतम लब्धिवसेण चरमसरीरी सो य मुनि । इय देसणा

निसुणेह, गोयम गणहर सचरिय तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ।२५। तप सोसिय निय अंग-अम्हा सगति न उपजे ए, किम चढसे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए । गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए, तो, मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंडकलस ध्वजवड सहिए, पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरतेसर महिय । निय निय काय प्रमाण, चहुं दिसि संठिय जिणह बिंब, पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥२७॥ वयर सामीनो जीव तिर्यक् जृंभक देव तिहां प्रतिबोध्या पुंडरीक, कंडरिक अध्ययन भणी । चलता

गोयम सामि, सवितापस प्रतिबोध करे, लेई आपरण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥२८॥ खीर खांड घृत आरण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे, गोयम एकरण पात्र, करावे पाररणो सवे। पंच सयां शुभ भाव, उज्ज्वल भरियो खीर मिसे, साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥२९॥ पञ्च सया जिरणनाह, समवसरण प्राकारत्रय, पेखवि केवल नारण, उप्पन्नो उज्जोय करे। जारणे जरणवि पीयूष गाजंती घन मेघ जिम, जिनवारणी निसुरणेवि, नारणी हुआ पंचसया ॥३०॥ वस्तु ॥ इरण अनुक्रम इरण अनुक्रम नारण पन्नरसे, उप्पन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिरणनाह वंदइ, जारणेवि जगगुरु वयरण तिहि नारण अप्पारण निंदइ। चरम

जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेह, छेह जाय आपण सही, होस्या तुल्ला बेव ॥३१॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणन्द, पूनमचन्द जिम उल्लसिय, विहरियो ए भरह-वासम्मि, वरस बहुत्तर सवसिय । ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल सघं सहिय, आवियो ए नयणानद नयर पावापुर सुर-महिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे; आपणो ए तिसला देवि, नदन पुहतो परमपए । बलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण सम ए, तो मुनि ए मन विसवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥३३॥ इण समे ए सामिय देखि, आप फनासु टालियो ए, जाणतो ए तिहुअण

नाह, लोक विवहार न पालियो ए । अति-
भलो ए, कीधलो सामि, जाण्यो केवल मागसे
ए चिन्तव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लाग
से ए ॥३४॥ हुं किम ए वीर जिणंद, भग-
तिहि भोलेभोलव्यो ए, आपणो ए ऊँचलो
नेह, नाह न संपे साचव्यो ए, साँचो ए वीत-
राग, नेह न हेजें लालियो ए तिणसमे ए,
गोयमचित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥३५॥
आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागे साहियो ए,
केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज ऊमा-
हियो ए । तिहुअण ए जय जयकार केवल
महिमा सुर करे ए, गणधरु ए करय बखाण;
भविया भव जिम निस्तरे ए ॥३६॥ वस्तु ॥
पढम गणहर पढम गणहर बरस पच्चास,

गिहवासें सवसिय, तीस बरस सजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण; बार वरस तिहुअण नमसिय, राजगृही नयरी ठव्यो बाणवइ बरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चन्दन सोगध निधि । जिम गगाजल लहिरथा लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हसा, जिम सुरतरु वर कणयवतसा, जिम महुयर राजीव वनें । जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अवर तारागण विकसेतिम गोयम गुरु केवल घनें ॥३६॥ पूनम निसि जिम ससियर

सोहे, सुर तरु महिमा जिम जग मोहे, पूरब दिस जिम सहसकरो। पञ्चानन जिम गिरिवर राजे, नरवई घरजिम मयगल गाजे तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा; जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमीपति भुयवल चमके, जिम जिन मन्दिरं घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥४१॥ चिन्ता मणि कर चढियो आज, सुर तरु सारे वंछिय काज, कामकुम्भ सहु वशि हुआ ए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरि ए पणवक्खर पहिलो पभणीजे, माया वीजो श्रवण सुणीजे, श्रीमति सोभा संभवए। देवां धुर अरिहंत

नमीजे, विनय पहु उवझाय थुणीजे इण मत्रे गोयम नमो ए ।।४३।। पर घर वसता काय करीजे, देस देसातर काय भमीजे, कवण काय श्रायास करो । प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहा घरे ए ।।४४।। चवदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो । श्रादिहिं मगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ।।४५।। धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल श्रवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए । विनयवत विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिम साखा विस्तरो ए ।

गोयम सामीनो रास भणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजें रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ।।४६।। कुंकुम चंदन छडो दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण वेसणो ए। तिहां बेसी गुरु देसना तेसी; भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ।।४७।।

।। इति श्री गौतम स्वामीजी का रास सम्पूर्ण ।।



राग प्रभाती जे करे, प्रह उगमते सूर ।।
भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ।।१।।
अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भंडार ।। जे गुरु गौतम समरियें, मनवांछित दातार ।।२।।
पुंडरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ।।

प्रह ऊठी नें प्रणमतां, चवदेसे वावन्न ॥३॥ खतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि सपण ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभीष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नम· ॥६॥ इति ॥



॥ गौतम स्वामी का प्रभातिया ॥

प्रह उठी नित प्रणमिये गुणवन्ता गौतम गणधार वर गुर्वरनामे भलो, गाव सोहे देश मगध मझार द्विजवसुभूतिनेघरे तिहा लीनो उत्तम अवतार ॥१॥ पृथ्वी माता जन्मियातनु सोहे सुन्दर सुकुमार गौतमगोत्र विरा-

जता नाम थाप्यो इन्द्रभूति उदार ॥ २ ॥ सोवन वरण सुहावणो तनु उंचो कर सात निहार। श्री महावीर जिणंद के पट्टधारी पहला गणधार ॥ ३ ॥ बाणु वरष को आउखो प्रभु पहुंता मुक्ति मझार। नाम लिए सुख संपजे दुःख जावे दोहग दूर पुलाय ।४। पद सेवा गुरुराय की पुण्ययोगे पामे नर नार। साधुक्षमा कल्याण की नित हो जो बंदना बारंबार ॥५॥ इति सम्पूर्ण ॥



॥ गौतमस्वामीनुं अष्टक ॥

प्रह ऊठी गौतम प्रणमीजे, मनवंछित फलनो दातार। लब्धिनिधान सकल गुण-

सागर, श्रीवर्द्धमान प्रथम गणधार, प्रह० ॥१॥ गौतम गोत्र चउदे विद्यानिधि, पृथिवी मात पिता वसुभूति। जिनवर वाणि सुणी मन हरख्यो, बोलायो नामे इद्रभूति प्रह० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत लिए प्रभु पासे, दिए जिनवर त्रिपदी मनरग। श्रीगौतम गणधरे तिहा गू थ्या, पूरव चउदे द्वादश अग, प्रह० ॥३॥ लब्धे अष्टापद गिरि चढीयो चैत्यवदन जिनवर चोवीस। पनरेसे तिओत्तर तापस, प्रतिबोधी कीधा निजसीस प्रह० ॥ ४ ॥ अद्भुत एह सुगुरुनो अतिशय, जसु दीखे तसु केवलज्ञान। जावज्जीव छठ छठ तप पारणे, आपणपे गोचरिए मध्यान प्रह० ॥ ५ ॥ कामधेनु सुरतरु चितामणि, नाममाहि जसु

करेरे निवास। ते सद्गुरुनो नाम जपतां, लाभे लखमी लील विलास. प्रह० ॥ ६ ॥ लाभ घणो विणजे व्यापारे, आवे प्रवहण कुशले खेम। ते सद्गुरुनो ध्यान धरंतां, पामे पुत्र कलत्र वहुप्रेम. प्रह० ॥७॥ गौतमस्वामि तणा गुण गातां, अष्ट महासिद्धि नव रे निधान। 'समयसुन्दर' कहे सुगुरु प्रसादे, पुण्य उदय प्रगट्यो प्रधान. प्रह० ॥८॥



॥ शत्रुंजय का रास ॥

(दाहे)

श्री ऋषहेसरपायनमी। आणी मन आनंद।
रासभणुं रलियामणु। सेत्रुंजेनो सुखकंद।१।

सवतचार सतोतरे। हुवा धनेसरसूर॥ तिण सेत्रु जमहातम कियो शिलादित्य हजूर॥२॥ वीरजिणद समोसरचा। सेत्रुंजउपरजेम॥ इद्रादिक आगलि कह्यो। सेत्रु जेमहात्म्य एम॥३॥ सेत्रुंज तीरथ सारिषो। नहिंछे तीरथ कोय॥ स्वर्गमृत्यु पाताल मे। तीरथ सघला जोय॥ ४॥ नामे नवनिधि सपजे। दीठा दुरित पुलाय॥ भेटता भवभय टले। सेवता सुख थाय॥५॥ जवूनामे द्वीप ए। दक्षिण भरत मझार॥ सोरठ देश सुहामणो। तिहा छे तीरथसार॥६॥

।। ढाल-पहिली ।।

(समगिरि-राग)

सेत्रुंजोने श्री पुंडरीक । सिद्धक्षेत्र कहुं तहत्तीक ।। विमलाचलने करुं परणाम । ए सेत्रुंजेना इकवीस नाम ।। १ ।। सुरगिरिने महागिरि पुण्यरास । श्रीपद पर्वत इंद्र-प्रकास ।। महातीरथ पूरवे सुखकाम । ए० ।।२।। सासतोपर्वतने दृढ़ शक्ति । मुक्ति निलो तिणकीजे भक्ति ।। पुष्फदंत महापदम सुठाम ।।ए० ।३। पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश । पाताल-मूल अकर्मकतास ।। सर्व काम कीजे गुणग्राम ।। ए० ।। ४ ।। श्री सेत्रुंजेना इकवीस नाम । जपेज बेठा अपणे ठाम ।। सेत्रुंजे जात्रानो फल लहे । महावीर भगवंत इम कहे ।।५।।

(दोहे)

सेत्रुंजो पहिलेअरे । असीजोयणपरमाण ॥
पिहुलो मूल ऊच पणे । छव्वीस जोयण जाण
॥१॥ सित्तरजोयण जाणवो वीजे अरे वि-
शाल ॥ वीसजोयण ऊँचो कह्यो । मुझ वदना
त्रिकाल ।२। साठ जोयण तीजे अरे । पिहुलो
तीरथराय ॥ सोल जोयण ऊचो सही ।
ध्यान धरु चितलाय ॥३॥ पचास जोयण
पिहुल पणे ॥ चोथे अरे मझार ॥ ऊचो दस
जोयण अचल । नितप्रणमे नरनार ॥४॥
वार जोयण पचम अरे मूलतणे विस्तार ॥
दो जोयण ऊचो अछे । सेत्रु जो तीरथ सार
।५। सात हाथ छठे अरे । पिहुलो परवत एह ।
ऊचो होस्ये सोधनुष सासतो तीरथ एह ॥६॥

।। ढाल–दूसरी ।।

(जिनवरसुं मेरो मन लीणो)

केवल ज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर। अनंत सीधा-इण ठामरे ।। अनंतवली सीझसे इणठामे। तिण करु नित परणामरे।।१।। सेत्रुंजे साधु अनंता सीधा। सीझसी वलीय अनंतरे।। जिणसेत्रुंज तीरथ नहीं भेट्यो। ते गरभावास कहंतरे ।। सेत्रुंजे ।।२।। फागुण सुदि आठ-मने दिवसे ।। ऋषभदेव सुखकाररे रायण-रूंख समोसर्या स्वामी पूरबनिन्नाणूं वार रे। से ।। ३ ।। भरतपुत्र चैत्री पूनमदिन। इण सेत्रुंजगिरि आयरे।। पांचकोडीसुं पुंडरीक सींधा तिण पुंडरीक कहायरे ।। से० ।।४।। नमि विनमि राजा विद्याधर बेवेकोडी संघा-

तरे ।। फागुण सुदि दसमी दिन सीधा, तिण प्रणमु परभातरे ।। से० ।।५।। चैत्रमास वदि चउदसने दिन, नमी पुत्री चौसठरे ।। अण-सणकरि सेत्रु जेगिरि ऊपर, ए सहुसीधा एक-ट्ठरे ।। से०।।६।। पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्रविडने वारिखिल्लरे ।। काती सुदि पूनम दिन सीधा, दस कोडीसु मुनि शिल्लरे ।। से० ।।७।। पाचे पांडव इणगिरिसीधा, नवनारद ऋषिरायरे । साम्ब प्रद्युम्न गया इहा मुगते, आठे करम खपायरे ।। से० ।।८।। नेमि विना तेवीस तीर्थंकर, समोसरया गिरिश्रृगरे ।। अजित शाति तीर्थंकर वेउ, रह्या चोमासे रगरे ।। से० ।। ९ ।। सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चा सुख साधरे ।। पाचसे साधु-

सुं सेलगमुनिवर, सेत्रुंजे शिवसुख लाधरे ॥ से० ॥१०॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंजे सीधा, भरतेसरने पाटरे ॥ राम अने भरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाटरे ॥ से० ॥११॥ जालि मयालीने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोडीरे ॥ साधुअनंता सेत्रुंजे सीधा, प्रणमु बेकर जोडीरे ॥ से० ॥१२॥

॥ ढाल–तीसरी ॥

(चौपाई)

सेत्रुंजेना कहुं सोलउद्धार ते सुणज्यो सहूको सुविचार ॥ सुणतां आणंद अंग न माय । जन्म जन्मना पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी । समवसर्या स्वामी हित करी ॥ भरत गयो वंदणने काज । ये

उपदेश दियो जिनराज ॥२॥ जगमाहे मोटा श्रीअरिहतदेव । चौसठ इन्द्र करे जसुसेव ॥ तेहथी मोटा सघ कहाय । जेहने प्रणमे जिनवरराय ॥३॥ तेहथी मोटो सघवी कह्यो । भरत सुणीने मन गहगह्यो ॥ भरत कहे ते किम पामिये । प्रभु कहे सेत्रु जे जात्रा किये ॥४॥ भरत कहे सघवी पद मुझ । थे आपो ह्ु अगज तुझ ॥ इद्रे आण्या अक्षतवास । प्रभु आपे सघवी पद तास ॥५॥ इद्रे तिण वेला ततकाल । भरत सुभद्रा विहुनेमाल ॥ पहिरावी घर सप्रेडिया ॥ सखर सोनाना रथ आपिया ।६। ऋषभदेवनी प्रतिमावली । रत्नतणी दीधी मनरली । भरते गणधर घर तेडिया । शातिक पौष्टिक सहु तिहा किया

।।७।। कंकोत्री मूंकी सहु देश । भरत तेडायो संघ अशेष ।। आयो संघ अयोध्यापुरी । प्रथम थकी रथ जात्रा करी ।।८।। संघ भगति कीधी अति घणो । संघ चलायो सेत्रुंजा भणी ।। गणधर बाहुबल केवली ।। मुनिवर कोडि साथे लिया वली ।। ९ ।। चक्रवर्तिनी सगली रिद्धि । भरते साथे लीधी सिद्ध ।। हय गय रथ पायक परिवार । तेतो कहतां नावे पार ।।१०।। भरतेसर संघत्री कहवाय । मारग चैत्य उधरतो जाय ।। संघ आयो सेत्रुंजे पास । सहुनी पूगी मननी आस ।११। नयणे निरख्यो सेत्रुंजेराय । मणि माणक मोत्यांसुं वधाय ।। तिण ठामे रही महोच्छव कियो । भरते आणंदपुर वासियो

॥१२॥ सघ सेत्रु जे ऊपर चढ्यो । फरसता पातिक झडपड्यो ॥ केवल ज्ञानी पगला तिहा ॥ प्रणम्या रायण रुख छे जिहा ॥१३॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त । ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी । भरते दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधर देवतणे उपदेश । इन्द्रे वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथ तणो देहरो । भरत करायो गिरि सेहरो ॥१५॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग । रतनतणी प्रतिमा मनरग ॥ भरते श्री आदी-सरतणी । प्रतिमा थापि सोहामणी ॥१६॥ मरुदेवानी प्रतिमा भली । माही पूनिम थापी रली ॥ ब्राह्मी सु दरी प्रमुख प्रासाद । भरते थाप्या नवले नाद ॥१७॥ इम अनेक प्रतिमा

प्रासाद । भरत कराया गुरुसुप्रसाद ।। भरत-तणो पहिलो उद्धार ।। सगलोही जाणे संसार ।।१८।।

।। ढाल–चौथी ।।

(सिंधूडो–आसाउरी)

भरततणे पाटे आठमे । दंड वीरज थयो रायोजी भरत तणीपरे संघ कीयो । सेत्रुंजे संघवी कहायोजी (सेत्रुंजे उद्धार सांभलो–टेक०) ।। १ ।। सोल मोटा श्रीकारोजी । असंख्यात बीजावलि ।। तेहनकहुं अधिका-रोजी ।।से०।।२।। चैत्य करायो रूपा तणो । सोनानो बिंब सारोजी ।। मूलगो बिंब भंडा-रियो । पच्छिम दिशि तिण वारोजी ।।से० ।।३।। सेत्रुंजेनी जात्रा करी । सफल कियो

अवतारोजी ॥ दडवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥४॥ सौ सागरोपम व्यतिक्रम्या, दडवीरजथी जिवारोजी ॥ ईशानेंद्र करावीयो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥५॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारोजी। तिण सेत्रुंजेनो करावीयो, ए चौथो उद्धारोजी ॥ से० ॥६॥ पाचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी ॥ तिण सेत्रुंजेनो करावियो, ए पाचमो उद्धारोजी ॥ से० ॥७॥ भुवनपती इन्द्र ने कियो, ए छट्ठो उद्धारोजी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥ से० ॥८॥ अभिनदन पासे सुण्यो, सेत्रुजेनो अधिकारोजी ॥ व्यतर इन्द्र करावियो, ए आठमो

उद्धारोजी ॥ से० ॥६॥ चंद्र प्रभु स्वामिनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारोजी ॥ चंद्रजस राय करावियो, ए नवमो उद्धारोजी ॥ से०॥१०॥ शांतिनाथनो सुणी देशना, शांतिनाथ सुत सुविचारोजी ॥ चक्रधर राय करावियो, ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥११॥ दशरथ सुत जगदीपतो, मुनिसुव्रत स्वामी बारोजी ॥ श्रीरामचन्द्र करावियो, ए ग्यारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१२॥ पांडव कहे अम्हे पापीया, किम छुटां मोरी मायोजी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणो, जात्रा कियां पाप जायोजी ॥ से० ॥१३॥ पांचे पांडव संघ करी, सेत्रुंज भेट्यो अपारोजी । काष्ट चैत्य बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारोजी ॥ से० ।१४। मम्माणी

पाषाणनी, प्रतिमा सुन्दर सरूपोजी ॥ श्री-
सेत्रु जेनो सघ करी, थापी सकल सरूपोजी॥
से० ॥१५॥ अट्ठोत्तर सो वरसा गया, विक्रम
नृपथी जिवारोजी ॥ पोरवाड जावड करा-
वियो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१६॥
संवत् बार तिश्रोत्तरे, श्रीमाली सुविचारोजी॥
वाहडदे मुहते करावियो, ए चौदमो उद्धा-
रोजी ॥ से० ॥ १७ ॥ सवत् तेरे इकोत्तरे,
देसल हर अधिकारोजी ॥ समरे साह करा-
वियो, ए पनरमो उद्धारोजी ॥ से० ॥१८॥
सवत् पनर सत्यासीये, वैसाख वदि सुभवा-
रोजी ॥ करमे डोसी करावियो, ए सोलमो
उद्धारोजी ॥ से० ॥ १६ ॥ सप्रति काले
सोलमो, एवरते छे उद्धारोजी ॥ नित नित

कीजे वंजना, पामीजे भवपारोजी ।। से० ।।२०।।

(दोहे)

वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांभलो जिम छे तेम ।। सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ।। १ ।। जेहवो तेहवो दरसणी, सेत्रुंजे पूजनीक ।। भगवंतनो वेस वांदतां, लाभ हुवे तहतीक ।।२।। श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ।। दल परमाण समोलहे, पल्योपम सुखतेह ।।३।। सेत्रुजे ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ।। जिर्णोद्धार करावतां, आठ गुणोफल होय ।।४।। सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ।। चक्रवर्त्तिनी स्त्री थइ, शिव सुख पामे सार ।।५।। काती पूनिम

सेत्रुंजे, चढिने कर उपवास ॥ नरकी सो सागर समो, करे करमनो नाश ॥६॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सिद्धा दशक्रोड ॥ ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोड ॥७॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंजे साधु पडिलाभता, अधिको तेहथी देख ॥८॥

॥ ढाल–पांचमी ॥

(धन २ अयवती सुकुमालने–एदेशी)

सेत्रुंजे गया पाप छुटी ये, लीजे आलोयण एमोजी ॥ तप जप कीजे तिहा रही, तीर्थकर कह्यो तेमोजी ॥ से० ॥१॥ जिण सोनानो चौरी करी, ए आलोयण तासोजी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंजे चढो, एक करे उपवासोजी

।। से० ।।२।। वस्तु तणी चौरी करी, सात आंबिल सुध थायोजी ।। काती सात दिन तप कियां, रतन हरण पाप जायोजी ।।से०।।३।। कांसो पीतल तांवा रजतनो, चौरी कीधी जेणोजी ।। सात दिवस पुरमढ करे, तो छुटे गिरि एणोजी ।। से० ।।४।। मोती प्रवाला मूंगीया, जिण चौर्या नर नारोजी ।। आंबिल करि पूजा करे, त्रण टक शुद्ध आचारोजी ।। से० ।।५।। धान पाणी रस चोरिया, जे भेटे सिद्ध क्षेत्रोजी ।। सेत्रुंजे तलहटी साधुने, पडिलाभे सुध चित्तोजी ।। से० ।।६।। वस्त्राभरण जिणे हर्या, ते छुटे इण में लोजी ।। आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहु बेलोजी ।। से० ।।७।। देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध

थाये एमोजी ।। अधिको द्रव्य खरचे तिहा, पात्र पोखे वहु प्रेमोजी ।। से० ।। ८ ।। गाय भैंस घोडा मही, गजनो चोरणहारोजी । दीये ते वस्तु तीरथे, अरिहत ध्यान प्रकारोजी ।। से० ।।९।। पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे आपणो नामोजी ।। छुटे छम्मासी तप किया, सामायिक तिण ठामोजी ।। से० ।। १० ।। कु वारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारोजी ।। व्रत भाजे तिणने कह्यो, छम्मासी तप सारोजी ।। से० ।।११।। गौ विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहोजी ।। प्रतिमा आगे आलोवंता, छूटे तप करी तेहोजी ।। से० ।।१२।।

॥ ढाल–छट्ठी ॥

(कुंमर भले आवीयो एदेशी)

संप्रतिकाले सोलमोए, ए वरते छे उद्धार ॥ सेत्रुंजे यात्रा करूंए, सफल करूं अवतार ॥ से० ॥१॥ छ हरी पालतां चालियेए, सेत्रुंजे केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मिल्या बहुथाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखीयेए, वलि सत्तानी वाव ॥से०॥ तिहां विसरामो लीजिये, वडने चौतरे आय ॥ से० ॥ ३ ॥ पालीताणे पाजडीए चढिये, ऊठी परभात ॥से०॥ सेत्रुंज नदीय सोहामणीए, दूर थकीदेखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगुलाज ने हडेए, कलिकुंड नमीये पास ॥ से० ॥ वारीमांहे पेसीयेए, आणी अंग

उल्लास ॥से०॥५॥ मरुदेवी टूक मनोहरु ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शातिनाथ जिन सोलमाए, प्रणमी जे तसु पाय ॥ से० ॥६॥ वस पोरवाडे परगडोए, सोमजी साह मल्हार रूपजी सघवी करावियो ए। चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा चरचियेए, भमती माहि भला बिंब ॥ पाचे पाडव पूजियेए, अद्‌भुत आदि प्रलब ॥ से० ॥६॥ खरतर वसही खातिसु ए, बिंब जुहारु अनेक, नेमिनाथ चवरी नमु ए, टालू अलग उद्वेग ॥ से० ॥ १० ॥ धरमदुवार माहे नीसरु ए, कुगति करु अति दूर, आवु आदि-नाथ देहरे ए। करम करु चकचूर ॥ से० ॥११॥ मूलनायक प्रणमु मुदाए, आदिनाथ

भगवंत, देव जुहारुं देहरेए। भमती मांहि भमंत ॥से०॥१२॥ सेत्रुंजे ऊपर कीजियेए, पांचे ठाम सनात्र, कलश अठोत्तरसो करिए, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥१३॥ प्रथम आदीसर आगलेए। पुंडरीक गणधार ॥ रायण तल पगला नमुंए। शांतिनाथ सुखकार ॥ से० ॥ १४ ॥ रायण तल पगला नमुंए। चौमुख प्रतिमा चार ॥ बीजी भूमि बिबावलि पुंडरीक गणधार ॥ से० ॥१५॥ सूरज कुंड निहालियेए, अति भली उलका भोल ॥ चेलणा तलाई सिद्ध सिलाए, अंग फरसुं उल्लोल ॥से० ॥१६॥ आदिपुर पाजे उतरुंए। सिद्धवडलूँ विसराम। चैत्य प्रवाड इणपरि करीए। सीधा वंछित काम ॥ से०

॥१७॥ जात्रा करी सेत्रु जा तणोए। सफल कियो अवतार कुशल खेमसु आवियोए, सघ सहु परिवार ॥से०॥१८॥ सेत्रुंज रास सोहामणोए, साभलज्यो सहु कोई घर वेठा भणे भावसु ए, तसु जात्रा फल होइ ॥से० ॥ १६ ॥ सवत सोल वयासीयेए। सावण वदि सुखकार ॥ रास भण्यो सेत्रु जतणोए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥२०॥ गिरुवो गच्छ खरतरतणो ए। श्रीजिनचद सूरीस ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूजनाए। सकलचद सुजगीस ॥ से० ॥२१॥ तास सीस जग जाणियेऐ, समय सुन्दर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण स्वडोऐ, सुणता आणद थाय ॥से०॥२२॥



।। श्री पार्श्वनाथ स्वामी का छन्द ।।

अपने घर बैठा लीला करो । निज पुत्र कलत्र सुं प्रेम धरो । तुम देश देशान्तर कांइ दोड़ो । नित्य नाम जपो श्री नाकोडो ।।१।। मनवंछित सगली आस फले । सिर ऊपर चामर छत्र ढले । आगल चाले झल मल घोडो । नित० ।। २ ।। भूत ने प्रेत पिशाच वली । शाकरण ने डाकरण जाय टली । छल छिद्र न लागे कांई कोडो । नित० ।। ३ ।। एकान्तर ताव सियो दाह, औषध विन जाये क्षरण मांह । नहि दुःखे माथो पग गोडो । नित० ।।४।। कंठमाला गड गुंबड़ सगला । व्रण कूबड़ रोग टले सगला । पीड़ा न करे

फणगल फोडो । नित० ॥ ५ ॥ तू जागतो तीरथ पास पहु । तूने जाने सगलो जगत सहु । ततक्षण अशुभ करम तोडो । नित० ॥६॥ श्रीपास महेवा पुर नगरे । मे भेट्या जिनवर हरख भरे । समय सुन्दर कहे गुण जोडो । नित० ॥७॥ इति



॥ श्री गौतम-स्वामी का छन्द ॥

वीर जिणेसरकेरो शिष्य, गौतमनाम जपोनिश दीश । जे कीजे गौतम नु ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥१॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मन वछित हेला सपजे । गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व सजोग

।।२।। जे वैरी विरूआ वंकड़ा, तस नामे नावे ढुंकडा। भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौतम नां करूं वखाण ।।३।। गौतम नामे निर्मल काय, गौतम नामे वाधे जाय। गौतम जिन शासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ।।४।। शाल दाल सुरहाघृत गोल, मनवंछित कापड़ तंबोल। घर सुगृहिणी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ।।५।। गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जगजाण। महोटां मन्दिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ।।६।। हय गय रथ घोड़ानी जोड, वारू पहोंचे वंछित कोड़। महियल माने म्होटा राय, जो तुठे गौतम ना पाय ।।७।। गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी

सगती मले। गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवन्त अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे वहु। कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तूठे सपति क्रोड ।९।



॥ श्री सोलह सती का छन्द ॥

आदिनाथ आदि जिनवर वन्दी, सफल मनोरथ कीजियेए। प्रभाते उठी मंगलीक कामे, सोल सती नाम लीजियेए ॥१॥ वाल कुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी वेनडीए। घट घट व्यापक अक्षर रूपे, सोल सती माहे जेवडीए ॥२॥ वाहुवल भगिनी सतिय शिरोमणी, सुन्दरी नामे रिषभ सुताए। अक

स्वरूपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनुपम गुणयुताए ।। ३ ।। चन्दन बाला बालपणाथी, शीयल वन्ती शुद्ध श्राविका ए । उडदना बाकुला वीरे पडिलाभ्या, केवल लहीव्रत भाविकाए ।।४।। उग्रसेन धुश्रा धारिणी नन्दिनी, राजमती नेम वल्लभाए । जोवन वेशे कामने जीत्यो, संजम लेई देव दुल्लभाए ।।५।। पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपदतनया बखाणीये ए । एकसौ आठे चीर पुराणा, सीयल महिमा तस जाणीये ए ।।६।। दशरथ नृपनी नारी निरूपम, कौशल्या कुल चन्द्रिका ए । शीयल सलुणी राम जनेता, पुण्य तणी प्रनालिका ए ।। ७ ।। कोसम्बीक ठामे शतानीक नामे, राज्य करे रंग राजीयो ए । तस घर घरणी

मृगावती सती, सुर भुवने जस गाजीयो ए ।।८।। सुलसा साची शीयले न काची, राची नहीं विषया रसेए। मुखडुं जोता पाप पलाए, नाम लेता मन उल्लसेए ।।६।। राम रघुवशी जेहनी कामिनी, जनक सुता सीता सतीए । जग सहु जाणे धीरज करता, अनल शीतल थयो शीयल थीए ।। १० ।। काचे तातणे चालणी बाधी, कुवा थकी जल काढियोए । कलक उतारवा सतीय सुभद्रा, चम्पा वार उघाडियुं ए ।।११।। सुरनर वन्दित शीयल अखण्डित, शिवा शिवपद गामिनीए । जेहने नामे निर्मल थईए, वलीहारी तसनामनीए ।।१२।। हस्तीनागपुरे पाडु रायनी, कुंता नामे कामिनीए । पाडव माता दसे दसारनो, व्हेन

पतिव्रता पद्मनीए ।। १३ ।। शीलवती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने वन्दियेए । नाम जपन्ता पातक जाऐ, दरिसणे दुरित निकंदीये ए ।।१४।। निषधा नगरी नल नरपतिनी, दमयंती तस गेहनी ए । संकट पड़तां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ।।१५।। अनंग अजिता जगजन पूजीत, पुष्पचलाने प्रभावती ए । विश्व विख्याता कामिनीदाता, सोलमी सती पद्मावती ए ।। १६ ।। वीरे भांखी, शास्त्रे साखी, उदय रत्न भाखे मुदाए । प्रह उठीने जेनर भणसे, ते लहिस्ये सुख संपदाए ।।१७।। इति



॥ श्री शान्तिजिन विनतीरूप छद ॥

शारद माय नमु शिर नामी, हु गाऊ त्रिभुवन के स्वामी । शाति शाति जपे सहु कोई, ता घर शाति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शाति जपी जे कीजे कामा, सोही काम होवे अभिरामा । शाति जपी परदेस सिधावे, ते कुशले कमला लेइ घर आवे ॥२॥ गर्भ थकी प्रभु मारि निवारी, शाति जो नाम दियो हितकारी । जे नर शाति तणा गुण गावे, ऋद्धि अचित्ती ते नर पावे ॥३॥ जा नर कू प्रभु शाति सहाई, ता नर कू कछु आरती नाइ । जो कुछ वछे सो ही पूरे, दु ख दारिद्र मिथ्या मति चूरे ॥४॥ अलख निरजन ज्योती

प्रकाशी, घट घट अंतर के प्रभु वासी । स्वामी स्वरूप कह्यो नवि जाय, कहतां मो मन अचरज थाय ।।५।। डार दीये सब ही हथियारा । जीत्या मोह तरणा दल सारां । नारी तजी शिवसु रंग राचे, राज तज्यु परण साहिब साचे ।।६।। महाबलवन्त कहिजे देवा, कायर कुंथु न एक हरणे वा । ऋद्धि सयल प्रभु पास लहीजें, भिक्षा आहारी नाम कहींजे ।।७।। निंदक पूजक कूं सम भावक, परण सेवक कूं शिव सुखदायक । तज्यो परिग्रह भये जगनायक, नाम जपत सवे सिद्धि दायक ।।८।। शत्रु मित्र समचित्त गरणीजें, नाम देव अरिहन्त भरणीजे । सयल जीव हितवन्त कहीजे, सेवक जाणी महापद दीजे ।।९।। सायर जैसा होत

गभीरा, दूषण एक न माहे शरीरा । मेरू अचल जिम अन्तर जामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी ।।१०।। लोक कहे जिनजी सब देखे, पण सुपनान्तर कबहु न पेखे । रीश विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगीशा ।।११।। मान विना जग आण मनाई, माया विना शिव सु लय लाई । लोभ विना गुण राशि ग्रहिजे, भिक्षु भयो त्रिगडो सेवीजे ।।१२।। निर्ग्रंथ पणे शिर छत्र धरावै, नाम यति पण चमर ढुलावे । अभय दान दाता सुखकारण, आगल चक्र चले अरिदारण ।।१३।। श्री जिनराज दयाल भणीजे, कर्म सबे को मूल खणीजे । चउविह संघे तीरथ थापे, लच्छी घणी देखी नवि आपे ।।१४।।

[illegible] माहरे मन में तुं हिज रमे ।
[illegible] दूर ।। चिन्ता. ।।३।। मुज
[illegible] तुम सूं प्रीत, दूजो कोइ न आवे
[illegible] । [illegible] सुभ तेजप्रताप पंडूर ।। चिन्ता.
[illegible] सोवाड़ियां वालेसर मेल, बैरी दुश्मन
[illegible] । तुझे माहरे हाजरा हुजूर ।। चिंता.
[illegible] एह स्तोत्र मनमें जे धरे, तेहना चित्या
[illegible] सरे । आधि व्याधि दुःख जावे दूर ।।
[illegible] ।।६।। भव भव देज्यो तुम पाय सेवा,
[illegible] अरिहंत देवा । समय सुन्दर
[illegible] भरपुर ।। चिन्ता. ।।७।।

श्री अभयदेवसूरि महाराज की स्तुतिः॥

(चाल—विलसै ऋद्धि स्मृद्धि मिली)

जय जग आचारज पट्टधारी,
श्रीअभयदेव गुरु उपकारी ।
गुण छत्तीसें अधिकारी,
जिण वीर परपर उजवारी ॥१॥
शुद्ध मुनिवरसंघ सुपरवरिया,
भूमडल विचरे गुण दरिया ।
सघ कमल विकसन करिया,
गुरु तेज विराजे दिन करिया ॥२॥
प्रभु उग्र तपस्या आदरता,
दुरजेय कषायने वस करता ।
नरपति सव पायें परता,
उच्छव सु नगर मे पग धरता ॥३॥

घरा हरषे प्रभुनी स्नात्र करै,
वलि स्नात्रजले गुरु तन चुपरै ।
रोग गयो महिमा पसरै,
स्तंभनपुर तीरथ प्रगट धरै ।।११।।
नव अंग तरणी टीकासु करै,
जिरण वयरण रयरण स्थिरपाल धरै ।
उपांग अनें प्रकररण पवरै,
टीका करि शासरण ने उधरै ।।१२।।
देवी स्वीकार्या गुरु साचा,
वर ज्ञान क्रिया वलि सुध वाचा ।
खरतर गच्छ नायक जाचा,
तेहूने कुंरण बोले काचा ।।१३।।
बहुकाल लगै संयमशाली,
प्रतिबोध्या श्रावक धर्म आली ।

जिनचद्रसूरि गुरु उजवाली,
वैयालीस मे पाट सुचिरपाली।१४।
श्री गुर्जर देशे वरनामे,
वलि कप्पड वणिजेइ सोनामे।
अणसण करि सुरपद पामे,
चौथे सुरलोकमे सुख ठामे ॥१५॥
तीजा परमेष्ठी गुरु राया,
नवपद मे तीजे पद गाया।
धन धनजे पूजे गुरु पाया,
ऋद्धिसिद्धि मिलै निर्मल आया।१६।
श्रीखरतरगच्छ सुरतरु राजै,
जिहा क्षेम कीर्ति शाखा छाजै।
तिहां पाठक शिवचद्र राजै,
शिष्य रामचद्र गुणे हित काजै।१७।

अथ मणिभद्रजी का छन्द प्रारम्भ ॥

(दोहा)

सरस वचन द्यो सरस्वति, पूजु गुरुके पाय ।
गुण माणिकना गावतां,सेवकने सुख थाय ।१।
मणिभद्र में पामीयो,सुरतरु जेहवे स्वामी ।
रोग शोग दूर हरे, नमु चरण शिर नामी ।२।
तुं पारश तुं पारेसो, कामकुम्भ सुखकार ।
साहिब वरदायी सदा, अनधननो आधार ।३।
तुं हिज रत्न चितामणि, चिंता से निस्तार ।
माणिक साहिब माहरा, दोलतना दातार ।४।
देव घणा दुनियां नमें, सुणता करे सन्मान ।
मणिभद्र मोटो मरद, दीपे देश दीवान ।५।

॥ अडियल्ल छन्द ॥

दीपंतो जग माहि दीसे,
पिशुन तणां दल तुंहिज पीसे ।
अष्ट भयथी तुंहिज उगारे,
निन्दा करतां शत्रु निवारे ॥६॥
जगमुख्य देव महा उपगारी,
ऐरावण जिणरे असवारी ।
मणिभद्र मोटो महाराजा,
वाजे निज छत्रीशे बाजा ॥७॥
हेम विमल सूरि वरदाई,
क्षेत्रपाल क्षण खाड्यो खाई ।
उणे वेला माणक तु उड्यो,
भैरवने गुर जासु कूड्यो ॥८॥

मानोजी माणिक वचन हमारो,
थें छोडो हुं चाकर थारो ।
मणिभद्र जी वाचा मानी,
कालो-गोरो किदा कानो ॥९॥
पाट भक्त पण वाचा पाली,
वलती सामगरी संभाली ।
जालिम माणिक बांहे झाल्यो,
देश अंधारे जदि उजवाल्यो ॥१०॥
कुमति रोग कियो निकन्दन,
मणिभद्र तपगच्छरो मंडन ।
ध्यान धरे एक तारो ज्यारे,
तेहनां कारज बेला सारे ॥११॥
बोल शिर राखे दरबारे,
वसुधा कीर्ति अधिक वधारे ।

आठम चौदश जे आराधे,
सघला जाप दीवाली साधे ।।१२।।
श्री मणिभद्र पूजे जे मोटो,
तिणरे कदिय न आवे तोटो।
भावे करी तुझने जे भेटे,
माणिक तेहना दारिद्र मेटे ।।१३।।
धन अखूट ते वहु ऋद्धि पावे,
माणिक तत्क्षण रोग गमावे ।
सेवक ने तु बाहे साहि,
महिमा थाई जग सहूमाहि ।।१४।।
जो मुझने सेवक करी जाणो,
तो माणिक एक विनती मानो ।
दिल भरी दर्शन मुझने दीजे,
कृपा करी सेवक सुख कीजे ।।१५।।

सुरपति माहरी अरज सुणीजे,
कवियणने तत्क्षण सुख दीजे ।।२४।।
ताहरा पारन पामे कोइ,
जालम वीरारि जगमां जोई ।
द्यो वंछित माणिक वरदाई,
सेवकने गहगट्ट सुहाई ।।२५।।

।। कलश छप्पय छः ।।

गुण गातां गहगट्ट, अन्न धन कपड़ो आवे ।
गुण गातां गहगट्ट, प्रगट घर सम्पत् पावे ।
गुण गातां गहगट्ट, राजमान भोज दीरावे ।
गुण गातां गहगट्ट, लोक सहु पूजा ल्यावे ।
सुख कुशल आशा सफल,
उदय कुशल एणी परे कहे ।

गुण माणिकना गावता,
लाख लाख रीझते लहे ॥२६॥



॥ श्रीमाणिभद्रजी का छन्द प्रारम्भ ॥

श्री माणिभद्र सदा समरो, उर बीच मे ध्यान अखड धरो ॥ जपीया जय जयकार करो, भजीया सहु नित्य भडार भरो ॥१॥ जे कुशल करे नामज लीया, आनन्द करे देव आश कीया । सोभाग्य बधे जग सहस्स गुणो, दिल सेव्यो दे प्रभु जश दुगुणो ॥२॥ अरियण सहु अलगा भागे, विरुआ वैरी जन पाय लागे । सकट शोक वियोग हरे, उण वेला आय सहाय करे ॥ ३ ॥ भूत भयकर सहु

भागे, जक्ष योगरणी सायरणी नवि लागे । वाय चोराशी जाय अलगी, लखमी सहु आय मले वेगी ।।४।। गुलपापडियां गुरुवार दिनें, लापसिया लाडु शुद्ध मने ।। धूप दीप नेवेद धरो, आठम दिन पूजा अवश्य करो ।।५।। जेहने दिन प्रति जाप सदा, तस सुपनांतर में प्रत्यक्ष कदा।। जपियां सहु जाये आपदा, कोउ मरण घरे रहे न कदा ।।६।। मुहमद सारु तमें जस कर्यो गुण सायर जिस्यो तमे गुण भर्यो ।। श्री दीननाथजी दया करो, शिर उपर हाथ दियो सखरो ।७। भवियण जे भावे भजशे, कारज-सिद्धि आपरणी करशे ।। पूज्यां पुत्र वधे दुगुणा, किणी बातें कदि न उणा ।।८।। श्री माणि-भद्र मन में ध्यावो, सुख संपत्ति बहुवेगे

पावो ।। लक्ष्मी कीर्त्ति वर आप लहे, शिव-
कीर्त्ति मुनि एम सुजश कहे ।।६।।



।। श्री दादा गुरु गुण इकतीसा ।।

।। दोहा ।।

श्री गुरु देव दयाल को,
मन मे ध्यान लगाय ।
अष्ट सिद्धी नवनिधि मिले,
मनवाञ्छित फल पाय ।।

।। चौपाई ।।

श्री गुरु चरण शरण मे आयो
देख दरस मन अति सुख पायो ।
दत्त नाम दुःख भजन हारा,
विजलो पात्र तले धरनारा ।।१।।

उपशम रसका कन्द कहावे,
जो सुमरे फल निश्चय पावे ।
दत्त सम्पत्ति, दातार दयालु,
निज भक्तन के हैं प्रतिपालु ॥२॥
बावन वीर किये वश भारी,
तुम साहिब जग में जयकारी ।
जोगणी चौंसठ वशकर लीनी,
विद्या पोथी प्रगट कीनी ॥३॥
पांच पीर साधे बलकारी,
पंच नदी पंजाब मझारी ।
अन्धों की आंखें तुम खोली,
गूंगो को दे दीनी बोली ॥४॥
गुरु बल्लभ के पाट बिराजो,
सूरि सकल में सूरज सम साजो ।

जग मे नाम तुम्हारो कहिये,
परतिख सुर तरु सम सुख लहिये ।५।
इष्ट देव मेरे गुरु देवा,
गुणी जन मुनि जन करते सेवा ।
तुम सम और देव नहीं कोई,
जो मेरे हितकारक होई ।।६।।
तुम हो सुरतरु वञ्छित दाता,
मैं निश दिन तुमरे गुण गाता ।
पार ब्रह्म गुरु हो परमेश्वर,
अलख निरजन तुम जगदीश्वर ।।७।।
तुम गुरु नाम सदा सुख दाता,
जपत पाप कोटि कट जाता ।
कृपा तुम्हारी जिन पर होई,
दु ख कष्ट नहीं पावे सोई ।।८।।

अभयदान दाता सुखकारी,
परमातम पूरण ब्रह्मचारी।
महाशक्ति बल बुद्धि-विधाता,
मैं गुरु नित उठ तुम्हें मनाता ॥६॥
तुम्हरी महिमा है अति भारी,
टूटी नाव नई कर डारी।
देश देश में स्तूप तुम्हारा,
संघ सकल के हो रखवाला ॥१०॥
सर्व सिद्धि निधि मंगल दाता,
देव परी सब शीश नमाता।
सोमवार पूनम सुखकारी,
गुरु दर्शन आवे नरनारी ॥११॥
गुरु छलने को किया विचारा,
श्राविका रूप जोगणी धारा।

कीली उज्जयिनी मझधारा,
गुरु गुण अगणित किया विचारा ।१२।
हो प्रसन्न दीने वरदाना,
सात जो पसरे मही दरम्याना ।
युगप्रधान जय जन हितकारा,
अवड मान चूर्ण कर डारा ॥१३॥
मात अम्बिका प्रकट भवानी,
मन्त्र कलाधारी गुरु ज्ञानी ।
मुगल पूत को तुरत जिलाया,
लाखो जन को जैन बनाया ॥१४॥
दिल्ली मे पतशाह बुलावे,
गुरु अहिंसा ध्वज फहरावे ।
भादो चौदस स्वर्ग सिधारे,
सेवक जन के सकट टारे ॥१५॥

पूजे दिल्ली में जो ध्यावे,
संकट नहीं सपने में आवे ।
ऐसे दादा साहब मेरे,
हम चाकर चरणन के चेरे ॥१६॥
निशदिन भैंरू गोरे काले,
हाजिर हुकम खड़े रखवाले ।
कुशल करण लीनो अवतारा,
सदगुरु मेरे सानिधकारा ॥१७॥
डूबती जहाज भक्त की तारी,
पंखी रूप धर्यो हितकारी ।
संघ अचंभा मन में लावे,
गुरु तब शुभ व्याख्यान में हाल सुनावे ।१८।
गुरु वाणी सुन सब हरखाये,
गुरु भवतारण तरण कहाये ।

समय सुन्दर की पंच नदी मे,
फट गई जहाज नई की छिन मे ।१९।
अब है सदगुरु मेरी बारी,
मुझ सम पतित न और भिखारी ।
श्री जिन चन्द सूरि महाराजा,
चौरासी गच्छ के सिरताजा ।।२०।।
अकबर को अभक्ष छुडायो,
अमावस को चाद उगायो ।
भट्टारक पद नाम धरावे,
जय जय जय जय गुणि जन गावे ।२१।
लक्ष्मी लीला करती आवे,
भूखा भोजन आन खिलावे ।
प्यासे भक्त को नीर पिलावे,
जलधर उण वेला ले आवे ।।२२।।

अमृत जैसा जल बरसावे,
कभी काल नहीं पड़ने पावे ।
अन धन से भरपूर बनावे,
पुत्र पौत्र वहु सम्पत्ति पावे ॥२३॥
चामर युगल ढुले सुखकारी,
छत्र किरणीया शोभा भारी ।
राजा राणा शीश नमावे,
देव परी सबही गुण गावे ॥२४॥
पूरव पच्छिम दक्षिण तांई,
उत्तर सर्व दिशा के मांही ।
जोत जागती सदा तुम्हारी,
कल्पतरु सदगुरु गणधारी ॥२५॥
विजयइन्द्रसूरि सूरीश्वर राजे,
छड़ीदार सेवक संग साजे ।

जो यह गुरु इकतीसा गावे,
सुन्दर लक्ष्मी लीला पावे ॥२६॥
जो यह पाठ करे चितलाई,
सदगुरु उनके सदा सहाई ।
वार एक सौ आठ जो गावे,
राजदड वन्धन कट जावे ॥२७॥
सवत् आठ दोय हजारा,
आसो तेरस शुक्रवारा ।
शुभ मुहरत वर सिंह लगन मे,
पूरण कीनो बैठ मगन मे ॥२८॥

॥ दोहा ॥

सदगुरु का स्मरण करे,
धरे सदा जो ध्यान ।

प्रातः उठी पहिले पढ़े,
होय कोटि कल्याण ॥२६॥
सुनो रतन चिंतामणि,
सद्गुरु देव महान् ।
वन्दन श्रीगोपाल का,
लीजे विनय विधान ॥३०॥
चरण शरण में मैं रहूं,
रखियो मेरा ध्यान ।
भूल चूक माफी करो,
हे मेरे भगवान ॥३१॥



मणियाले दादाचंद्रसूरिजी का स्तोत्र।

श्रीजिन दत्त सूरिन्द पय श्रीजिनचन्द मुणिन्द नयना मणिमडित भालयश कुशल कुमुद वणचद ॥१॥ सवत शिव सत्ताणवय सद्दण्ठमि सुदि जम्मु रासलतासु मात जसु देल्हणदेविसुधम्म ।२। सवतिवार तिरोतरय फागुण नवमि विशुद्ध पंच महव्यय नोरेधरिय बालत्तणि पडिवुद्ध ॥३॥ वारहसय पचोत्तर ए वइसापाहछ्ठठेहि थपिड विक्कमपुरनयरि जिणदत्त सूरि सुपट्टि ॥४॥ तेवोसई भादव कसिणी चवदसि सुहपरिणमि सुरपुरि पत्तउ मुणिपवर सिरि जोयणि पुरठासि ॥५॥ सुह गुरु पूजा जे करइए नासय तासकिलेस

रोगसोग आरति टलइए मिलेहंलच्छि सुवि-
शेष ॥६॥ नाम मंत्र जेमुख जपइए मणु तणु
शुद्धि तिसंझ मन वांछित सवि तसु हुवइ
कज्जारंभ अवंझ ॥७॥ जासु सुजसु जगि
झिगमिगई चंदुज्जलनिकलंक प्रभुप्रताप गुण-
विप्फुरई हरइ डमर अरिशंक ॥८॥ इय
श्रीजिनचंद सूरि गुरु संथुणिउ गुणि श्रीपुण-
सागर विनवइ सुह गुरु होइ प्रसन्न ॥९॥

श्रीजिनचंद सूरि महाप्रभाविक स्तोत्रं संपूर्ण।



सज्जन गुरु इकतीसा

अरिहत सिद्ध आचार्य और, उपाध्याय भगवन्त।
वन्दन हो शतश मेरा, लोक मे जितने सन्त ॥१॥
श्री जिनवर वीतराग को, मन मे ध्यान लगाय।
इकतीसा जिनका कहू, है सज्जन गुरुराय ॥२॥
उन्नीसो पैंसठ के वर्ष, जयपुर नगरे मध्ये अति हर्ष। गुरुवर्य्या का जन्म हुआ है, मानो रवि का उदय हुआ है ॥३॥ पिता गुलाबचन्द सा के प्यारे, मेहतावदेवी के प्राणों के तारे। लूणिया कुल का भाग्य जगाया, परिवार मन अति हर्षाया ॥४॥ हुआ लाड से लालन पालन, नाम धरा है गुरु का सज्जन। ज्ञान ध्यान की शिक्षा पाई, नाम और गुण किया सुखदाई ॥५॥ गोलेछा गोत्र का भाग्य जगाया, कल्याणमल सा से विवाह रचाया। धूम से आई दीवान कुल में, सबको रग दिया त्याग तप में ॥६॥ टोटा चुमासास ये रहकर,

शास्त्रों का गहन अध्ययन कर। वैराग उठा तव निर्मल मन में, प्रस्ताव रखा परिवार जन में ।।७।। संसार को है असार जाना, संयम को ही सव कुछ माना। काम क्रोध तज छोड़ी माया, क्षण में मन कषाय भगाया ।।८।। संघर्षो से करी लड़ाई, समता सागर में ही नहाई। कामादि संसारी तृष्णा, तज तुम भए संयम व्रतधारी ।।६।। शांत भाव धर कर्म विनाशे, जन जन को है दिया उपदेशे। जन मन अति हर्षित होते हैं, अपने कर्म का मल धोते हैं ।।१०।। जन्म लिया तेरापन्थी में, ब्याह किया थानकपन्थी में, खरतरगच्छ में लेकर दीक्षा, तत्त्वज्ञान की दी है शिक्षा ।।११।। संवत उन्नीसौ निन्याने आयी, ज्ञान गुरु से शिक्षा पाई। उपयोग गुरु से पाई शिक्षा, जन जन पाते ज्ञान की भिक्षा ।।१२।। ज्ञान गुरुवर जाप परायण, जपती रहती नमो जिनाणं। शांत छवि सूरत अति प्यारी, दर्शन को आते नर नारी ।।१३।। यश निरपेक्ष थी

शासन सेवा, तत्त्व चिन्तन लीना कुछ मेवा। मौन ध्यान में अधिक थी रहती, जो भी कहती मित ही कहती ॥१४॥ अद्भुत ज्योति अद्भुत प्रज्ञा, आगम ज्ञान की है मर्मज्ञा। तत्त्वज्ञान की प्रखर परिज्ञा, है हर क्षण में आप सुविज्ञा ॥१५॥ हिन्दी राजस्थानी प्राकृत भाषा, गुजराती या संस्कृत भाषा। सभी विषय में है पारगत, सदैव रहती है अध्ययन-रत ॥१६॥ श्रोतागण के मन को भाई। जन जन तक फैलाई वाणी, तेरा कुछ नही है प्राणी ॥१७॥ शान्त और सरल प्रकृति, सहनशीलता की प्रतिमूर्ति। तप जप में है सदा सलग्ना, करुणा सरितयो गुण सपना ॥१८॥ लेखिका प्रखर बुद्धि शालिनी, आशु कवयित्री प्रतिभाशालिनी। रचनाओं में भाव भरे हैं, गहरे ज्ञान से समझ सके हैं ॥१९॥ गुरु सेवा में ही तन मन धन, सब कुछ सदा किया है अर्पण। आए विकट या विषम परिस्थिति, रहती गुरुचर्या मुस्कराती ॥२०॥

कीर्ति तुम्हारी है अति भारी, गुण गाते सब नर और नारी । जिनवाणी जग में फैलाते, कर्म निवारण मार्ग बताते ।।२१।। जग में जैन धर्म दीपाया, जिन शासन तुमने चमकाया । लोक कल्याणी तुम कहलायी, मैत्री प्रेम की गंगा बहाई ।।२२।। सूर्य सा तेज मेरु सा धीरा, आप है सागर सम गंभीरा । चन्द्रमा सी पाता शीतलता, जो भी आपके चरणा में आता ।।२३।। दोय सहस उनचालिस वर्षे, जोधानगर हुआ अति हर्षे । प्रवर्तिनी पद जन जन मध्ये, पाया कान्ति गुरु सानिध्ये ।।२४।। शांत स्वभावी अति मनस्वीनी, क्षमादायिनी प्रखर तेजस्विनी । राग द्वेष तृष्णा को तजकर, कदम बढ़ावे मुक्ति पथ पर ।।२५।। जयपुर कोटा, टोंक, अजमेर, लखनऊ, कलकत्ता और बीकानेर । दिल्ली, झुंझुनूं, ब्यावर, पावापुर, जामनगर, पालीताणा, जोधपुर।।२६।। फलौदी, सिवाना चौमासा किया है, जन मन अति आकर्षण हुआ है ।

रहे चौमास अति सुखदायी, घर घर ज्ञान की गगा बहाई ।।२७।। अधकार मे जीवन ज्योति, सदा बहाती सुधा हरस्थिति । धर्म क्रान्ति जग मे फैलाती । भक्तो को है राह दिखाती ।।२८।। उपदेश आपका जबसे पाया, बालाओ का मन मुस्काया । अज्ञान शूल का नाश कराया, सयम का पुष्प खिलाया ।।२६।। सज्जन गुरु के चरण मे, हो शत् शत् वन्दन । चरण शरण मे मैं रहूँ दूर करो क्रन्दन ।।३०।। निर्मला आई तव शरण, लेकर श्रद्धा सुमन । करो गुरु स्वीकार तुम, शत शत अभिनन्दन ।।३१।।



गुरु महिमा

(छंद)

राजे थुम्म ठौर ठौर, एसो देव नहीं और—
दादो दादो नाम से, जगत यश गायो है।
आपणे ही भावआय, पूजे लक्खलोग पाय—
प्यासनको रण माझ, पाणी आन पायो है।।
वाट घाट शत्रु थाट, हाट पुर पाटण में,
देह गेह नेह सु कुशल बरतायो है।
धर्मसिंह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करे,
साचो श्रीजिन कुशलगुरु नाम यों कहायो है।।

